श्रीकालिदासविरचितम्

शृङ्गारतिलकम्

अंग्रेजी एवं मालिनी हिन्दीव्याख्याविभूषितम्

SRINGARATILAKAM OF SHRI KALIDASA

with

The English and Malini Hindi Commentaries

व्याख्याकार

डॉ. रामबहादुर (शुक्ल)

महाकवि कालिदास का नाम आते ही भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में दिये गये उनके योगदान का संस्मरण उनकी महनीयता की अनुभूति करा ही देता है। कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र नामक नाटक में लोक जीवन को त्रिविध गुणों-माधुर्य, ओज और प्रसाद से चमत्कृत मानते हुए, यह स्वीकार किया है कि लोकचरित में तो नाना रसों की अन्विति देखने को मिलती है। प्रकृत्या मानव भी विविध रूप रंग के जहाँ होते हैं, वहीं उनकी रुचियों भी अलग-अलग होती हैं। आचार्यभरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अष्टविध रसों का उल्लेख करते हुए यहाँ तक कह दिया, तत्र रसानेव तावदादावभिव्याख्या-स्याम:। नहि रसादृते कश्चिदर्थ: प्रवर्तते। शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स एवं अद्‌भुत में से शृंगाररस को रसराज भी कहा जाता है, क्योंकि इसी शृंगार रस के वशीभूत होकर व्यक्ति जहाँ आत्मप्रफुल्लता का अनुभव करता है, वहीं इसकी विप्रलम्भावस्था में कारुणिक भावनाओं से समन्वित होकर अपनी दयालु एवं परोपकारी प्रवृत्ति का दर्शन भी कराता है। कालिदास रचित शृङ्गारतिलक की अंग्रेजी एवं हिन्दी में सारगर्भित (मालिनी) व्याख्या लिखकर, इस ग्रन्थ को जनसामान्य तक पहुँचाने का उपक्रम किया है। ग्रंथ की भूमिका में लेखक ने रस से सम्बन्धित सामग्री एवं शृंगार से सम्बन्धित ग्रंथों की सूची दी है, उससे अध्ययन-अध्यापन में सौविध्य आने के साथ-साथ शोध के नये आयाम प्रस्फुटित होंगे।

ISBN : 978-81-7854-291-1 ₹ 300

मातृसमा सम्मान्या
प्रो. वेदकुमारी घई से
शुभाशी: कामना हेतु
सप्रेम भेंट

R.B Shukla
13/10/2017

(डॉ. रामबहादुर शुक्ल)

शृङ्गारतिलकम्
SRINGARATILAKAM

श्रीकालिदासविरचितम्

शृङ्गारतिलकम्

अंग्रेजी एवं मालिनी हिन्दीव्याख्याविभूषितम्

SRINGARATILAKAM
OF
SHRI KALIDASA

with

The English and Malini Hindi Commentaries

व्याख्याकार

डॉ० रामबहादुर (शुक्ल)

(समवाप्त अभिनव-अभिनवगुप्त अलङ्करण)

उपाचार्य, संस्कृत विभाग

जम्मू विश्वविद्यालय,

जम्मू तवी-180006

EASTERN BOOK LINKERS EBL

ईस्टर्न बुक लिंकर्स

दिल्ली : : (भारत)

प्रकाशक :
ईस्टर्न बुक लिंकर्स
हैड ऑफिस: 5825, न्यू चन्द्रावल,
जवाहरनगर, दिल्ली-110007
फ़ोन : 23850287, 9811232913

शोरूम: 4806/24, भरत राम रोड,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23285413

e-mail : eblindology@gmail.com
eblinfo76@gmail.com
Website : www.eblindology.com

© लेखक

संस्करण : 2016

मूल्य : ₹ 300

आइ.एस्.बी.एन्. : 978-81-7854-291-1

शृङ्गारतिलकम्

डॉ० रामबहादुर (शुक्ल)

मुद्रक : आर. के. प्रिंट सर्विस, दिल्ली

समर्पण

श्रीमद्भागवत्पुराण, सिद्धान्तकौमुदी, अमरकोश
जिन्हें कण्ठस्थ है।
जो त्याग, तपस्या एवं प्रसिद्ध दैवज्ञ
तथा मेरी प्रेरणा के मूर्त स्रोत हैं।
ऐसे पूज्यपिता **श्री शिवनाथ प्रसाद शुक्ल** के
चरणों में समर्पित है
यह ग्रन्थ पुष्प

नान्दीवाक्

जम्मूविश्वविद्यालयीये संस्कृतविभागे आचार्यपदमलङ्कुर्वाणं डॉ० रामबहादुरशुक्लवर्यमहं विद्यार्थिजीवनादेव सम्यतक्तया जानामि परित्तिनोमित्त। निसर्गादेव स्वोपाध्यायनिष्ठो मित्रवत्सलोऽनुसन्धानपरामणोऽयं युवा सुरभारत्यभ्युदय कार्येऽतितरां रुचिसम्पन्नो विविधाधिवेशन-सम्मेलन-शोधसङ्गोष्ठ्यादिव्याजेन समेषां सुरभारतीसमुपासकानां चित्तानि प्रेमाणि चात्मवशीकुर्वन् सम्प्रति परमां समज्ञां धत्ते।

किञ्च, अध्ययनाऽध्यापनेऽपि धृतपाटवश्शुक्लमहाभागो भारते सर्वमापि महीयते शोधप्रबन्धपरीक्षणेन, शोधा लेखवात्तनेन, परिसंवादेन, स्फुटवक्तृतया च। लेखनीधनिकोऽसौ सम्प्रति स्वव्याख्याग्रन्थेन प्रकाशयते प्रतिभामिति विज्ञाय महान्तं प्रसत्तिभरमाविभर्त्ति मन्मानसम्। ग्रन्थोऽज्ञं मयाऽतित्वरया स्थालीपुलाकन्यायेनाऽवलोथितो यद्यपि, तथाप्याशासेयदनेन मध्येविहत्समुदायं नवविपश्त्तिदयं प्रतिष्ठामवाप्स्यति।

सप्रणयमहं डॉ० रामबहादुरमात्मीयप्रवरं तत्क्रतिं च भूयो भूगोऽभिनन्दामि।

मिश्रोऽमिराज राजेन्द्रः

UNIVERSITY OF JAMMU

Tele / Fax : 0191-2452917
(M) : 094192-01218

Prof. Ramnika Jalali
Dean. Faculty of Arts
Department of Sanskrit

शुभाशीर्वचनम्

महाकवि कालिदास का नाम आते ही भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में दिये गये उनके योगदान का संस्मरण उनकी महनीयता की अनुभूति करा ही देता है। स्वयं कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र नामक नाटक में लोक जीवन को त्रिविध गुणों-माधुर्य, ओज और प्रसाद से चमत्कृत मानते हुए, यह स्वीकार किया है कि लोकचरित में तो नाना रसों की अन्विति देखने को मिलती है। प्रकृत्या मानव भी विविध रूप रंग के जहाँ होते हैं, वहीं उनकी रुचियों भी अलग-अलग होती हैं। यथा-

त्रैगुण्योद् भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते।
नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।।

आचार्यभरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अष्टविध रसों का उल्लेख करते हुए यहाँ तक कह दिया, तत्र रसानेव तावदादावभिव्याख्यास्यामः। नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते। शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स एवं अद्भुत में से शृंगाररस को रसराज भी कहा जाता है, क्योंकि इसी शृंगार रस के वशीभूत होकर व्यक्ति जहाँ आत्मप्रफुल्लता का अनुभव करता है, वहीं इसकी विप्रलम्भावस्था में कारुणिक भावनाओं से समन्वित होकर अपनी दयालु एवं परोपकारी प्रवृत्ति का दर्शन भी कराता है। परन्तु यह भी यथार्थ सत्य है कि रसानुभूति सहृदयजन को ही होती है। शायद महाकवि भोज ने ऐसी ही रसानुभूति से उत्प्रेरित होकर शृङ्गारप्रकाश लिखा होगा, एवं पण्डितराज जगन्नाथ ने अपने ग्रन्थ का नाम 'रसगङ्गाधर' किया होगा।

मेरे विभागीय सहयोगी अध्यापक डॉ० रामबहादुर (शुक्ल) ने कालिदास रचित शृङ्गारतिलक की अंग्रेजी एवं हिन्दी में सारगर्भित (मालिनी) व्याख्या लिखकर, इस ग्रन्थ को जनसामान्य तक पहुँचाने का उपक्रम किया है। इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। भले ही यह ग्रंथ उपाधिकारी कालिदास की रचना हो, लेकिन कालिदास नाम

का संकीर्तन आते ही मन में उसके प्रति आदर एवं सम्मान तो जग ही जाता है। इस ग्रंथ की भूमिका में लेखक ने रस से सम्बन्धित सामग्री एवं शृंगार से सम्बन्धित ग्रंथों की सूची दी है, उससे अध्ययन-अध्यापन में सौविध्य आने के साथ-साथ शोध के नये आयाम प्रस्फुटित होंगे, ऐसी आशा के साथ मैं ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार दोनों का युगपत् अभिनन्दन करती हूँ, एवं शुभाशी: देते हुए यह कामना करती हूँ कि वह भविष्य में ग्रन्थों का सृजन करके संस्कृत साहित्य के कलेवर परिवर्धन में अपना योगदान देते रहेंगे।

प्रो० रमणिका जलाली
कला संकायाध्यक्षा
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

Prof. S.D. Dwivedi
Principal Investigator
UGC Major Project
(Indian Model of Psychic Evolution)

Department of Sanskrit
University of Allahabad
Allahabad - 211002

पुरोवाक्

डॉ० रामबहादुरशुक्लमहोदयस्य नवनवोन्मेषशालिन्या: प्रतिभाया: विषये भारतवर्षस्य प्राय: सर्वे संस्कृतज्ञा: सुपरिचिता: सन्ति। "नैषधीयचरित की शास्त्रीय मीमांसा" नाम्नि तस्स प्रथम ग्रन्थे एकविंशतिशास्त्राणामुल्लेखेन तस्य लेखिन्या: प्रभाव: दरीदृश्यते। प्राचीनग्रन्थानां संशोधनपुरस्सरं नूतनं कलेवरं दत्त्वा प्रकाशनं नेतुरस्य पुण्यभाज: मनसि प्राचीनसंस्कृतकाव्यानां उद्धारे विद्यते अस्य कोऽप्यपूर्व संकल्प:। श्रीकालिदासविरचितं शृंगारतिलकम् एकं लघुकाव्यं वर्तते। अस्मिन् काव्ये सन्ति एकत्रिंशश्शृङ्गाररसान्विता: श्लोका:, परन्तु लेखकवरेण्येन अंग्रेजी-हिन्दी हतिद्वयो: भाषयो: या विस्तृता सारगर्भिताच व्याख्या कृता तया व्याख्यया शृङ्गारतिलकस्य कथावस्तु सरलं जातं, यद्यपि शृङ्गारतिलकस्य रचयिता भोजराजकालिक: कोऽपि अपर: कालिदास:, तथापि कालिदासस्य स्मृति: तु आगच्छत्व मनसि नामसंकीर्तनेन।

रसस्यावधारणा तु वैदिकी अस्ति। यथा ऋग्वेदे वर्णनं प्राप्यते–

य: पावमानीरध्येत्यृषिभि: सम्भृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।
.... तस्यै सरस्वती दुहे क्षीरम्।

ऋग्वेदे 9-63-31,32

तत्रैव अथर्ववेदेऽपि रसविषये वर्णनं प्राप्यते–

अकामो धीरो अमृत: स्वयम्भू रसेन तृप्ते न कुतश्चन नोन:।
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं भुवानम्।।

अथर्ववेदे 10-5-44

यत्र रसविषये तैत्तरीयोपनिषदि (2-1-क) ओषधिभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेत:, रेतस: पुरुष:, स वा एष पुरुषोऽन्नरसमय: "इति चर्चा प्राप्यते तत्र कठोपनिषदि (4-3), ऋषि: कथयति रसविषये–

येन रूपं रसं गन्धं शब्दान् स्पशाश्च मैथुनान्।
एतेनैव विजानाति किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत्।।

विश्वकोशेऽपि रसविषये वर्णनं प्राप्यते–

रसो गन्धरसे स्वादे तिक्तादौ विषरागयोः।
शृङ्गारादौ द्रवे वीर्ये देहधात्वम्बुपारदे।।

रसविषये कथयति भरतमुनिः नाट्यशास्त्रे (1–17)

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतिमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

तत्र रसविभेदान् कुर्वत् मुनेर्मतमस्ति यत्–

शृङ्गारहास्य-करुणा-रौद्रवीर-भयानकाः ।
वीभत्सादभुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।

ना.शा. 6/16

आदिकवेः वाल्मीकेर्मतमस्ति रसविषये यत्–

पाठ्ये गेये च मधुरं प्रमाणैस्त्रिभिरन्वितम्।
जातिभिः सप्तभिर्बद्धं तन्त्रीलयसमन्वितम्।।
रसैः शृङ्गारकरुणहास्यरौद्र भयानकैः।
वीरादिभिश्च संयुक्तं काव्यमेतद् गायताम्।।

रामायण– 1/4/8–9

सर्वत्र शृङ्गारस एव तिलकरूपे विराजते। शृङ्गारस्य तिलकः यदि क्रियते चेत् सात्त्विकविधैः, तर्हि संसारे सामाजिकतायाः मानवतायाश्च प्रचारः प्रसारश्च भविष्यति भविष्यति काले, इति तर्कयामि।

मन्ये, द्विविधभाषयोः व्याख्यायितस्य शृङ्गारतिलकग्रन्थस्य पूर्णावलोकनेन सम्यगध्ययनेन च सर्वेषां काव्यविदानां मनस्तोषः स्यादेवेति, शुभं कामयमानः विरमामि। शुभाशीः।।

शङ्कर द्विवेदी

प्रो. शङ्कर दयालद्विवेदी

संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद–211002

विषयानुक्रमणिका

नान्दीवाक् vii

शुभाशीर्वचनम् ix

पुरोवाक् xi

भूमिका xv

श्री कालिदासविरचितं शृङ्गारतिलकम्
मालिनी हिन्दी व्याख्यासहितम् 1–31

श्लोकानुक्रमणिका 32–33

भूमिका

'शृङ्गार' पद की झङ्कृति की अनुगूँज जिस किसी साधारण मनुष्य को यह सोचने को विवश कर देती है कि कोई नवयौवना सोलह शृङ्गार करके सुसज्जित हो रही होगी, या कोई प्रौढ़ा सजधज कर कहीं किसी उत्सव में जाने की तैयारी में सम्पूर्ण सौन्दर्य की सामग्री दर्पण के सामने रखकर स्वयं को मेनका या उर्वशी बनाने के लिए प्रयास कर रही होगी, अथवा कोई प्रेमी युवक स्वयं को सुसज्जित करने का उपक्रम कर रहा होगा। तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि शृङ्गार तो बाह्य सामग्रियों से सम्पृक्त अवयव है, तो फिर इसकी अनुभूति अन्तरात्मा द्वारा क्यों होती है? समाधान में यह कहा जा सकता है कि नेत्रों द्वारा सौन्दर्य का पान करने के अनन्तर ही सहृदय पाठक, दृष्टा या श्रोता शृङ्गार की अनुभूति मन में संजोता है अतएव शृङ्गार को बाह्य एवं आन्तरिक अनुभूति से जाना परखा जा सकता है।

यदि शृङ्गार पद की व्युत्पत्ति पर दृष्टि डाली जाये, तो यही कहा जा सकता है कि शृङ्ग में 'ऋ' धातु में अण् प्रत्यय लगाने से[1] [शृङ्ग+आर (ऋ=गतौ) प्राप्त्यर्थक] शृङ्गार पद बनता है। शृङ्गं ऋच्छति प्राप्नोति इति शृङ्गारः, शृङ्गम् अर्ति इति शृङ्गारः, येन, शृङ्ग रीयते इति- शृङ्गार। शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ+अण् के संयोग से शृङ्गार पद की व्युत्पत्ति जहाँ वामनशिवराम आप्टे ने की है। वहाँ उन्होंने साहित्यदर्पणकार सम्मत शृङ्गार की व्याख्या भी प्रतिपादित की है। यथा-

पुंसः स्त्रियां स्त्रियाः पुंसि संभोगं प्रति या स्पृहा।
स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः।।[2]

---

1. (क) शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छतीति, ऋ गतौ+कर्म्मयण् (अष्टाध्यायी 3/2/1) यद्वा शृ हिंसायाम्+भृङ्गारशृङ्गारौ (उणादिसूत्र- 3/136), इति आरन्प्रत्ययेन साधुः। भाग, 5, पृ. 134 से उद्धृत
   –शब्दकल्पद्रुम–राजाराधाकान्तदेव, भाग, 5, पृ. 134 से उद्धृत

   (ब) विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य – वाचस्पत्यम् – श्री तारानाथ तर्क वाचस्पति, भाग, 6, पृ. 5138
2. संस्कृत हिन्दी कोश–वामन शिवराम आप्टे, पृ. 1028

आचार्य विश्वनाथ ने रस की व्युत्पत्ति करते हुए[1] नौ प्रकार के रस स्वीकार किए हैं[2]। जिसमें शृङ्गार रस के विषय में उनकी मान्यता है कि–

शृङ्गं हि मन्मथोद्‌भेदस्तदागमनहेतुकः।
उत्तमप्रकृतिप्रायो रसः शृङ्गार इष्यते।।
परोढां वर्जयित्वा तु वेश्यां चाननुरागिणीम्।
आलम्बनं नायिकाः स्युर्दक्षिणाद्याश्च नायकाः।।
चन्द्रचन्दनरोलम्बरुताद्युद्दीपनं मतम्।
भ्रूविक्षेप कटाक्षादिरनुभावः प्रकीर्तितः।।
त्यक्त्वौग्रस्मरणालस्यजुगुप्साव्यभिचारिणः ।
स्थायिभावो रतिः श्यामवर्णोऽयं विष्णुदैवतः।।

तद्‌भेदावाह–

विप्रलम्भोऽथ संभोग इत्येष द्विविधो मतः।।[3]

दूसरे शब्दों में आचार्य विश्वनाथ को भी शृङ्गार पद की व्युत्पत्ति शृङ्गं ऋच्छति इति शृङ्गार मान्य है। शृङ्ग (अर्थात् कामुक युगल के उत्पीडक) का तात्पर्य जहाँ कामाभिर्भाव है, तो शृङ्गार का अभिप्राय है, ऐसा वह युगल जो इस प्रकार के कामोद्रेक से अभिभूत हो जाय। शृङ्गार रस के आलम्बन प्रायः उत्तम प्रकृति के प्रेमीजन ही होते हैं। परोढ़ा (परकीया) एवं अनुरागशून्य वेश्या नायिका को छोड़कर अन्य प्रकार की नायिकाएँ एवं दक्षिण आदि प्रकार के नायक ही इस रस के 'आलम्बन'

---

1. विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणो तथा।
   रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम।।
   सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
   वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।।
   लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित् प्रमातृभिः।
   स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।। –साहित्यदर्पण–3/1–3
2. शृङ्गार हास्य करुणरौद्रवीर भयानकाः।
   वीभत्सोऽद्‌भुत इष्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः।। –वही 3/182
   रसानुक्रम में स्थायीभाव हैं–
   रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा।
   जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च।। –वही 3/175
3. वही –3/183–186

विभाव होते हैं जबकि चन्द्र–चन्द्रिका, चन्दनानुलेपन, भ्रमर, झङ्कार आदि शृङ्गार रस के उद्दीपन विभाव और अनुभाव के रूप में प्रेमाश्रित भृकुटि–भङ्ग तथा कटाक्ष आदि होते हैं। औग्रय्, भरण आलस्य तथा जुगुप्सा को छोड़कर सभी व्यभिचारी भाव शृङ्गार रस के पोषक होते हैं। इसका स्थायिभाव रति, वर्णश्याम तथा देव विष्णु हैं। शृङ्गार रस के अधिदैवत को विष्णु मानने का तात्पर्य है–

अभिरूप्यमधिष्ठानं शृङ्गारस्य यतो भवेत्।
अभिरूपोत्तमो विष्णुस्तस्मादस्याधि दैवतम्।।[1]

शृङ्गार के द्विविध भेद होते हैं–1 विप्रलम्भ शृङ्गार एवं 2 संभोग शृङ्गार।

विप्रलम्भ शृङ्गाररस की वह अवस्था है। जिसमें नायक–नायिका का परस्परानुराग तो प्रगाढ़ हुआ करता है लेकिन उन दोनों का परस्पर मिलन नहीं हो पाता। इस रूप में विप्रलम्भ शृङ्गार के चार भेद हो जाते हैं। 1 पूर्वराग विप्रलम्भ 2 मान–विप्रलम्भ, 3 प्रवास विप्रलम्भ तथा 4 करुण विप्रलम्भ। वहीं सम्भोग शृङ्गार वहाँ माना जाता है जहाँ प्रेमानुरक्त नायिका तथा नायक के परस्पर प्रेमभरी दृष्टि युक्त दर्शन, परस्पर स्पर्श आलिंगन, चुम्बन, अधरपान आदि की अवस्थाएँ होती है। सम्भोग शृङ्गार भी चतुर्विध रूप में स्वीकृत है–

1. पूर्वरागान्तर संभोग शृङ्गार
2. मानान्तर सम्भोग शृङ्गार
3. प्रवासानन्तर संभोग शृङ्गार
4. करुणाविप्रलम्भानन्तर सम्भोग शृङ्गार।

वास्तव में शृङ्गार रस तो एक ही है, विविध अवस्थाओं एवं मनोदशाओं के कारण इसके विविध रूपों की अन्विति सामाजिक लोग कर लेते है। परन्तु जैसे वस्त्रादि के हल्के रंग में रंगे होने के कारण उन पर रंग चढ़ जाता है वैसे ही विप्रलम्भ के होने पर ही संभोग का आनन्द मिला करता है। यथा–

न विना विप्रलम्भेन संभोगः पुष्टिमश्नुते।
कषायिते हि वस्त्रादौ भूयान् रागो विवर्धते।।[2]

यदि रस की शास्त्रीय चर्चा की जाये, तो सर्वप्रथम भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र

---

1. साहित्यदर्पण– परिच्छेद तृतीय, पृ. 232 से उद्धृत्
2. साहित्यदर्पण– 3/2/3 की वृत्ति भाग से उद्धृत्

में ही इनकी अन्विति देखने को मिलती है, जिसमें आचार्य भरत ने अभिनय की दृष्टि से आठ रसों का उल्लेख किया है, वे हैं-1. शृङ्गार 2. हास्य 3. करुण 4. रौद्र 5. वीर 6. भयानक 7. वीभत्स एवं 8. अद्भुत[1]। आचार्य भरत तथा धनञ्जय ने नाटक में शान्तरस की स्थिति स्वीकार नहीं की है। शान्तरस की स्थिति के विषय में न केवल आधुनिक विद्वानों में अपितु प्राचीन विद्वानों में भी मतभेद दिखलायी पड़ता है। भरतमुनि के "अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृता" के आधार पर ही प्राचीन आचार्यों महाकवि कालिदास भामह और दण्डी आदि ने भी नाटक के आठ रसों का ही उल्लेख किया है, शान्त रस को उन्होंने मान्यता नहीं दी, जबकि कुछ अन्य आचार्यों ने शम को स्थायीभाव मानते हुए शान्तरस की सत्ता स्वीकार की है आचार्य धनञ्जय ने नाटक में शान्तरस की स्थिति स्वीकार न करते हुए शम नामक स्थायीभाव का निषेध करते हुए अभिहित किया है कि-

रत्युत्साह जुगुप्साः क्रोधो हासः स्मयो भयं शोकः।
शममपि केचित्प्राहुः पुष्टिर्नाट्येषु नैतस्य।।[2]

आचार्य धनञ्जय के अनुसार स्थायीभाव आठ होते हैं-रति, उत्साह, जुगुप्सा, क्रोध, हास, स्मय, भय तथा शोक। कुछ आचार्य (विश्वनाथ) शम जैसे-स्थायीभाव को भी मानते हैं किन्तु इस भाव की पुष्टि नाट्य में नहीं होती है। अतः नाट्य शास्त्र की दृष्टि से स्थायीभाव केवल आठ ही हैं। 'शम' जैसे स्थायीभाव तथा उसके 'शान्त रस' को अलग से मानना आचार्य भरत तथा आचार्य धनञ्जय सम्मत मत नहीं है, फिर भी आनन्दवर्धन तथा अभिनवगुप्त दोनों ने बड़े विस्तार से शान्तरस की स्थापना की है। आनन्दवर्धन ने धन्यालोक में महाभारत का मुख्य रस शान्त रस माना है, जबकि अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र की टीका अभिनव भारती में शान्तरस का विवेचन किया है। काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मट ने भी "निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः[3] लिखकर शान्त रस का प्रतिपादन किया है। इस प्रकार नौवें रस के रूप में जहाँ शान्तरस को मान्यता मिली, वहीं रुद्रट ने दसवाँ रस 'प्रेयान' को माना, तो साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने दसवें रस के रूप में 'वत्सल' को मान्यता

---

1. शृङ्गारहास्यकरुण रौद्रवीर भयानकाः।
   वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।। नाट्यशास्त्र-6/16
2. दशरूपक-4/35
3. काव्यप्रकाश-चतुर्थ उल्लास, सू-47

दी। भानुदत्त ने अपनी रसतरङ्गिणी में वत्सल के अतिरिक्त लौल्य, भक्ति एवं कार्पण्य को भी रस स्वीकार किया, जबकि रूपगोस्वामी ने उज्ज्वल नीलमणि में माधुर्य रस(भक्तिरस) की कल्पना की है, जबकि शृङ्गारप्रकाश में महाकवि भोज ने एक ही रस माना शृङ्गार जबकि भवभूति केवल करुण रस को ही रस मानते हैं, अन्य रसों को उसी रस का विकार मानते हैं।[1] तो वहीं पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर में शृङ्गार को रसराज मानते हैं, एवं अन्य रसों को मानव के भक्ति या अन्य भाव की स्थिति में होने वाला रस मानते हैं।

यदि नाट्यशास्त्र के व्याख्याकारों या भरतमुनि के परवर्ती काव्यकारों की रस सम्बन्धी विचारधारा की बात की जाये, तो नाट्यशास्त्र के दूसरे व्याख्याकार उद्भट ने भी शान्तरस को नाट्यरस माना है, जैसा कि काव्यालंकार के विवरण से स्पष्ट भी है।[2] तो वहीं रुद्रट ने भी शान्तरस को मानते हुए प्रेयान् रस को जोड़कर रसों की संख्या दश कर दी।[3] जबकि दशरूपक पर अवलोक टीका लिखने वाले धनञ्जय के समकालिक धनिक ने नाट्य में शान्तरस का निषेध किया।[4] फिर भी उद्भट, भट्टनायक, अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन आदि ने शान्त रस को मान्यता दी। नाट्यदर्पणकार रामचन्द्र गुणचन्द्र ने अभिनवगुप्त का समर्थन करते हुए शान्तरस को भी रसों का एक भेद ही माना। यथा–

शृङ्गार हास्यकरुणाः रौद्र-वीर-भयानकाः।
वीभत्सादद्भुत-शान्ताश्च रसाः सद्भिर्नव स्मृताः।।[5]

स्वयं भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में रसों की प्राचीनता एवं वैदिककाल में उनकी प्रासंगिकता तथा समीचीनता की पुष्टि की है उनका अभिमत है कि नाटक (नाट्यवेद) की निष्पत्ति के लिए उन्होंने रसों की अन्विति अथर्ववेद से ग्रहण की

---

1. एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्, भिन्नान् पृथक् पृथकमिवाश्रयते विवर्तान्।
–उत्तररामचरितम्–1/36

2. शृङ्गारहास्य करुण–रौद्र–वीर–भयानकाः।
वीभत्साद्भुत–शान्ताश्च नव नाट्ये रसाः स्मृताः। –काव्यालङ्कार–4/4

3. शृङ्गार–वीर–करुण–वीभत्साभयनकाद्भुता हास्यः।
रौद्रः–शान्तः प्रेयानिति मन्तव्याः रसाः सर्वे।। –रुद्रट–काव्यालंकार–12/9

4. निर्वेदादिरताद्रूप्यादस्थायी स्वदते कथम्।
वैरस्यायैव तत्पोषस्तेनाष्टौ स्थायिनो मताः।। –दशरुपक अवलोक 4/36

5. नाट्यदर्पण–3/9

है।[1] विश्व के प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद में भी रसविषयकसामग्री मिलती है जिसमें ऋषि कहते हैं कि–

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।
.... तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरम्।।[2]

ऋग्वेद में तो अन्यत्र ऋषि गीतरसिक देवों की गीतरस पीने का आमंत्रण भी देते हैं जो वचः स्वादः स्वादीयों रुद्राय वर्धनम्[3] एवं तं गोभिवर्षणं रसमादाय देववीतते। सूतं भराय सं सृज[4], तथा यो नो रसं दीप्सति पीत्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवानां यस्तनूनाम्[5] आदि मन्त्रों से स्पष्ट है। वहीं अथर्ववेद में रसपदार्थ निरूपण के प्रमाण भी देखने को मिलते हैं जैसा कि ऋषि के कथन से स्पष्ट है। यथा–

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चन नोनः।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।[6]

जैसे मन्त्र में देखा जा सकता है। रस जहाँ भौतिक रूप में विविध वस्तुओं में सन्निहित है वहीं पारमार्थिक रूप में भी रस की अवस्थिति छान्दोग्यउपनिषद् में प्रतिपादित दिखती है, जैसा कि 'मनोमय प्राणशरीरो भारूपः सत्यसंकल्प आकाशात्मा सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः सर्वरसः' जैसे विवरण में द्रष्टव्य है।[7] रस पद की भौतिकी अभिव्यक्ति कठोपनिषद् के अशब्दमस्पर्शमरूपव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च' में, तो आध्यात्मिकी अन्विति तैत्तरीयपनिषद् के 'रसो वै सः। रस ह्येवायं लब्ध्वाऽदनन्दी भवातीति' सदृश मन्त्र में दृष्टिगोचर होती है।[8] वास्तव में

---

1. (क) जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतिमेव च।
   यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।। –नाट्यशास्त्र–1/17
   (ख) तत्र रसानेव तावदादौ अभिधास्यामः।
   नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।। –ना.शा. 6/31
2. ऋग्वेद–9/63/31,32
3. ऋग्वेद–8/1/36
4. ऋग्वेद–9/6/6
5. ऋग्वेद–7/104/10
6. अथर्ववेद–10/5/44
7. छा.उ. 3/2
8. तैत्तरीयोपनिषद्–2/7

उपनिषदों में प्रयुक्त रस पद द्रव्यार्थ के लिए नहीं, अपितु उसमें सन्निहित शक्ति या उनसे मिलने वाले आस्वाद के लिए प्रयुक्त दिखता है। जैसा कि तैत्तरीयोपनिषद् के "औषधिभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः, रेतसः पुरुषः, स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः[1]", सदृश विवरण से स्पष्ट है। कठोपनिषदिक ऋषि भी कहते हैं कि–

येन रूपं रसं गन्ध शब्दान् स्पर्शाश्च मैथुनान्।
एतेनैव विजानाति किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत्।।[2]

महर्षि वाल्मीकि ने भी रामायण में रस की महानीयता पर प्रकाश डाला है। रामायण के बालकाण्ड में वह लिखते हैं कि–

पाठ्ये गेये च मधुरं प्रमाणैस्त्रिभिरन्वितम्।
जातिभिः सप्तभिर्बद्धं तन्त्रीलयसमन्वितम्।
रसैः श्रृङ्गारकरुणहास्यरौद्र भयानकैः।
वीरादिभिश्च संयुक्तं काव्यमेतद् गायताम्।।[3]

रामायण के अतिरिक्त, महाभारत एवं पुराणों में भी रस सम्बन्धी विवरण उपलब्ध मिलते हैं। अग्नि पुराण तो विश्वकोश रूप में मान्य है। महर्षि वात्स्यायन ने भले ही रस को रति के रूप में लेकर उसकी अन्विति लोकजीवन के लिए अनिवार्य स्वीकार की हो,[4] किन्तु फिर भी वह श्रृंगार रस को गृहस्थ जीवन के लिए उपयुक्त मानते ही हैं। विविध कविपण्डितों ने श्रृङ्गारस को प्रभूत रूप में मान्यता दी है चाहे वह महाकाव्यकार कालिदास, माघ, श्रीहर्ष हों या गद्यकाव्यकार, दण्डी, सुबन्धु, बाणभट्ट चाहे गीतिकाव्यकार चाहे नाटककार–कालिदास एवं भवभूति। आधुनिक सभी भाषाओं के लेखक भी श्रृंगाररसान्वित काव्य लिखने में प्रसन्नता की अनुभूति करते हैं। अभिनवभारतीकार भी लिखते हैं–

तत्र कामस्य सकलजाति सुलभतयात्यन्तपरिचितत्वेन सर्वान् प्रति हृद्यतेति पूर्वं श्रृङ्गारः।

अंग्रेजी भाषा में शेक्सपीयर जैसे विद्वानों ने जहाँ श्रृंगाररसपरक नाटक लिखकर

---

1. तैत्तरीयोपनिषद्–2/1/क
2. कठोपनिषद्–4/3
3. रामायण–1/4/8–9
4. (क) रसो रतिः प्रीतिर्भावो रोगा वेगः समाप्तिरिति रतिपर्यायः। –कामसूत्र 2/1/32
   (ख) रसो रतिः प्रीतिर्भावो रागो वेगः समाप्तिरिति रतिपर्यायाः। –कामसूत्र–2–1–65
   (ग) शास्त्राणां विषयस्तावद्यावन्मन्दरसा नराः। कामसूत्र–2/2/32

शृंगाररस का आख्यान किया है, वही उर्दू के रूमानी काव्यों में शृंगाररस अपनी पराकष्ठा को प्राप्त दिखता है।

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों में से कतिपय आचार्यों ने शृङ्गार रस को स्पष्टत: अथवा प्रकारान्तर से रसराज माना है। महाकवि केशव अपनी रसप्रिया में लिखते हैं–

"सबको केशवदास, नायक हैं शृङ्गार।"

स्पष्ट है कि उन्होंने शृङ्गार को रसों का प्रतिनिधि स्वीकारा, और इस रूप में शृङ्गार रस की सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध किया। वहीं कवि 'सोमनाथ' लिखते हैं–

"नव रस को पति सरस अति, रस सिंगार पहिचानि"

अर्थात् नव रसों का जो पति या स्वामी है, ऐसे अत्यन्त सरस शृङ्गार रस को पहिचानो, जैसा कथन करके वह भी शृङ्गार रस के रसराज होने की पुष्टि करते हैं, और महाकवि 'देव' का तो यहाँ तक मानना है कि–

"भूल कहत नवरस सुकवि, सकल मूल सिंगार"

स्पष्ट है कि वह शृङ्गार रस को सभी रसों का मूल मानते हैं इसलिए शृङ्गार रस के रसराजत्व पद प्राप्ति में कोई संदेह नहीं। हाँ, संस्कृत साहित्य के विद्वानों की सरणि में यदि किसी ने करुण रस को प्रधान रस माना एवं शृङ्गार रस को करुण रस का भेद, तो रूपगोस्वामी ने मधुर रस को 'भक्तिरसराट्' की पद्वी दी, परन्तु वहीं आचार्य भोज ने अपने शृङ्गारप्रकाश, एवं आचार्य जगन्नाथ ने अपने रसगङ्गाधर में शृङ्गार के रसराज होने की पुरजोर वकालत भी की है।

अब प्रश्न यह है कि शृङ्गार रस में ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण इसे रसराज कहा जाता है। इसके समाधान में कहा जा सकता है कि रस केवल सुखात्मक ही नहीं, दु:खात्मक भी होते हैं, ऐसा नाट्यदर्पणकार का मानना है, और शृङ्गार ही एक ऐसा रस है जिसमें उपलब्ध सुखानुभूति से जहाँ मानव हृदय गद्गद् हो उठता है वहीं सुखानुभूति से उसकी आँखों में आँसू भी छलछला उठते हैं, क्योंकि शृङ्गाररस दो भेदों वाला होता है, प्रथम संयोग शृङ्गार, जो सुखात्मक है, द्वितीय वियोग या विप्रलम्भ शृङ्गार, जो दु:खात्मक है। मतिराम भी कहते हैं–

होत नायका नायकहिं आलम्बित शृङ्गार।
ताते वरनौ नायकहिं नायक मति अनुसार।

उनका मानना है कि–

जिनके चित रतिभाव का, आद्यो अनुभव होइ।
रस शृङ्गार अनुभाव तेहि, बरनत कवि सब कोइ।।

संयोग शृङ्गार में नायक एवं नायिका के हावभाव, लीला, विलास, विच्छिति, विभ्रम, किलकिञ्चित, मोट्टायित, कुट्टमिति, विब्बोक आदि शृङ्गार के उपकरण माने जाते हैं, वहीं वियोग शृङ्गार के अभिलाषचित्त, स्मृति, गुणवर्णन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता एवं विवाद आदि दस दशाएँ देखने को मिलती हैं। हिन्दी साहित्य के साथ-साथ संस्कृत या अंग्रेजी साहित्य में भी सम्भोग शृङ्गार के अन्तर्गत नखशिख, नायक नायिका भेद, अष्टयाम, षड्ऋतु वर्णन, हावभाव चित्रण, मिलन, परिहास, क्रीडाविलास आदि का सुखद विवरण देखने को मिलता है, जब कि विप्रलम्भ शृङ्गार में पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, वियोग की दस दशाएँ, दूती, बारहमासा, सन्देश, ऋड्ऋतु आदि का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन पाठक को भावों की गङ्गा में डुबकी लगवा ही देते हैं। महाकवि विहारी ने नायिका की आंगिक चेष्टाओं द्वारा इसके सौन्दर्य की एक अमिट छाप नायक के मानसपटल पर बड़ी कुशलता से टंकित कर डाला। यथा-

त्रिवली नाभि देखाय करि, शिर ढकि सकुच सभाय।
अली गली की ओट है, चली भली विधि चाय।।

शृङ्गार रस का ही यह चमत्कार है कि नायिका अपनी भावभंगिमा एवं वक्रोक्ति से नायक को अपना मन्तव्य समझा देती है। यद्यपि भारतीय रमणियों की सहजशालीनता और लज्जाशीलता उनकी प्रच्छन्न कामैषणा को उद्दीप्त नहीं कर पाती, फिर भी प्रौढ़ा नायिका द्वारा आँख मूंदने के बदले नायक की पीठ पर उरोजों का संस्पर्शन किया जाना अवश्य एक मधुर कल्पना है। महाकवि चिन्तामणि लिखते हैं-

आंखिनि मूंदिबे के मिस आनि अचानक पीठि उरोज लगावैं।
केहूँ केहूँ मुसक्याइ चितै अंगराइ अनूपम अंग दिखावैं।।
नाह छुई छल सों छतियाँ हंसि भौंह चढ़ाइ अनन्द बढ़ावैं।
जोवन के मदतत्त तिया हित सो पति को नित नित्त चुरावैं।।

इस प्रकार शृङ्गार रस की ही ऐसी उद्भावना है जिसमें नायिका नायक को अपने से दूर नहीं जाने देने का उपक्रम करती दिखती है। गृहस्थ धर्म के अनुजीवी दम्पतियों में भी यह शृङ्गार ही एक ऐसा रस है, जो दाम्पत्यजीवन को नित्य नवीन किया रखता है, जो सामर्थ्य अन्य रसों में देखने को नहीं मिलता। नवविवाहिता

ललना गौने के समय पतिगृह गमन हेतु तैयार है। उसकी समवयस्क एवं बड़ी बधुएँ उसका शृङ्गार कर रही हैं, और ससुराल में प्राप्त होने वाले सुखों की मधुर चर्चा के साथ-साथ उसे शील चतुराई आदि की बातें भी सिखा रही है, एवं अन्त में हंस कर कह देती हैं **"हमेशा प्रियतम के मन में कोमल और अच्छी लगने वाली बातें"**, जिसे सुनते ही नायिका के उरोजों पर अनुराग के अंकुर निकल पड़ते है। महाकवि 'देव' की यह रमणीय कल्पना देखते ही बनती है यथा-

गौने के चार चली दुलही, गुरु लोगन भेषन भेष बनाये।
सील समान सखीन सिखायो, सवै सुख सासुरेहु के सुनाये।।
बोलिया बोल सदा हंसि कोमल, जे मनभावन के मन भाये।
यो सुनि ओछे उरोजनि पै, अनुराग के अंकुर से उठि आये।।

स्पष्ट है कि इन प्रेमांकुरों के कारण जहाँ एक ओर नायिका के आन्तरिक प्रेमभाव की ऐसी मूक व्यंजना प्रियतम से भावी मिलन की स्थिति स्पष्ट कर रही है, वहीं दूसरी ओर उसकी सहज शालीनता और लज्जाशीलता के सूक्ष्म तन्तुओं में उलझी हुई उसके मानस की यौन चेतना उभरते हुए उन उरोजों पर जैसे प्रस्फुटित हो उठी दिखती है। यह एक अनुभवगम्य तथ्य है कि नयी नवेली दुल्हन की सीधी चितवन ही नायक को आनन्दित करती रहती है, फिर बाँकी या तिरछी चितवन तो निःसंदेह नायक को प्रेमरस से सराबोर ही कर देती है। बलभद्र कवि लिखते हैं-

बाँकी चितवन में करैगी कहा बलभद्र,
सूधी चितवन में असाधु साधु होत है।

हावभाव के चित्रण भी शृंगार रस की अन्विति के बिना उत्कृष्टता को नहीं प्राप्त हो सकते। परकीया नायिका अपने पति के साथ गाँठ जोड़कर कथा सुनने के लिए बैठी है, वहीं पास में कृष्ण भी बैठे हुए हैं, इधर पुरोहित जी पुराण बाँच रहे हैं, उधर नायिका के नेत्र भटनागर के सौन्दर्यरसपान करने में इतने छक गये हैं कि पुरोहित जी क्या कह रहे हैं, इसकी उसे तनिक भी सुधि नहीं है। शृंगार की ऐसी मधुर प्रसंगोद्भावना में कवि सरदार ने मौलिकता का सजीव चित्र खींचा है। यथा-

कथा सुनिबे को बैठि पति संग गाँठ जोरि,
जी में कछू आनि गाँठि गाँठ ठकिबो करैं।
कालिदास तहाँ बैठो पास में गोविन्द आछे,
रुचिर मधुपान से छबीलो छकिबो करैं।।
घट नटनागर की मूरति समाइ रही,

घूँघट की ओर यकटक टकिबो करैं।
अटको तिया को मन नवल सुजान संग,
वापुरो पुरोहित पुराण बकिवो करैं।।

नायिका दूर से ही अपनी पैनी चितवन से नायक के कामव्यथा से ग्रस्त मानस को घायल करके उसे अबाध गति से ललचा रही है। नायक की ऐसी मन:स्थिति की भावपूर्ण अभिव्यंजना का उत्कृष्ट निदर्शन करते हुए विहारी लिखते हैं–

पति रति की बतियाँ कहीं, सखी लखी मुसकाय।
कै कै सवैं टलाटली, अली चली सुखपाय।।

संयोग शृंगार के अन्तर्गत मिलन और विनोद की मार्मिक अभिव्यक्तियाँ देखने को मिलती हैं। प्रेम के ऐसे मधुर प्रसंगो की उद्‌भावना में कवि पद्‌माकर को देखें। प्रसंग यह है कि कृष्ण किसी गोपी का वेश बनाकर उस स्थान पर गये, जहाँ कृष्ण का रूप बनाकर कोई गोपिका बैठी है। जब कृष्ण रूप गोपी, गोपी रूप कृष्ण के हाथ को दबाती है, तो गोपी रूप कृष्ण कृत्रिम रूप से अपनी पीड़ा का भाव व्यक्त करते हैं किन्तु उनकी प्रवृत्तियों के विपर्यय के कारण सारा नाटकीय व्यापार एक अपूर्व सरसता में पर्यवसित हो जाता है, देखें, कैसे?

रूप रचि गोपी को गोविन्द गो तहांई,
जहाँ कान्ह बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है।
कहै पद्‌माकर यों उलट कहै को कहा,
कस कै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है।।
नारी ते न होत नर, नर ते न होत नारी,
विधि के करेहूँ कहूँ काहू ना निहारी है।
काम करता की करतूत या निहारी जहाँ,
नारी नर होत नर होत लख्यौ नारी है।

इस प्रकार संयोग शृङ्गार जहाँ मनुष्यों में सरसता एवं आह्लादकता उत्पन्न करता है, वहीं विप्रलम्भ या वियोग शृंगार कारुणिक दृश्य। इसकी उपादेयता एवं महत्ता सभी साहित्यों में स्वीकार की गयी है, जिस प्रकार दु:ख का अनुभव करने के बाद थोड़े सुख की प्राप्ति में भी व्यक्ति सुख का अनुभव कर लेता है, ठीक उसी प्रकार विप्रलम्भ, शृंगार की परिस्थितियाँ सह चुका मानव ही वास्तव में संयोग शृंगार के क्षणों का भरपूर आनन्द उठा सकता है। वियोग शृंगार वहाँ होता है, जहाँ अनुराग

तो अति उत्कट होता है, परन्तु प्रिय समागम नहीं होता, फलतः नायक या नायिका की आँखों में आँसू निकल आते है, मिलने को बेकरार उनके दिल कराह उठते हैं। इसके चार भेद होते हैं, पूर्वराग, मान, प्रवास एवं करुण। वियोग की मार्मिक व्यंजनाओं के निरूपण में महाकवि मतिराम अद्वितीय है। वह मुग्धा नायिका की वियोगावस्था का चित्र निरूपित करते हुए लिखते हैं–

जा दिन ते चलिबे की चलाई तुम,
ता दिन ते वाके पियराई तन छाई है।
कहै मतिराम छोड़े भूपन वसन पान,
सखिन सो खेलनि हंसनि विसराई है।।
आई ऋतु सुरभि सुहाई प्रीति वाके चित,
ऐसे में चलो तो लाल रावरी बड़ाई है।
सोवत न रैन दिन रौवत रहति वाल,
बूझे ते कहति मायिके की सुधि आई है।।

नायिक अपने नायक के वियोग में कष्ट का अनुभव करती है, चिंतित हो उठती है, और यह कह बैठती है कि यह विरहाग्नि मुझे जला ही डालेगी। सुन्दर कवि विरहावस्था से व्यथित किसी नायिका का चित्रण करते हुए लिखते हैं–

सुख सेज सुगन्ध सुधाकर शीत समीर सुहाति नहीं सखियो।
कविराज कहैं इहि भांतिनि कैसे, विना जग जीवन जाय जियो।
कबहूँ विरहाग्नि में तचवैं कबहूँ दृग नीर में बोरि दयो।
पिय के विछुरे हियरा इहि काम, लोहार के हाथ को लोह कियो।।

और पावस ऋतु में वियोगिनी की रातें, कितनी बड़ी हो जाती है, इसकी मौलिक उद्‌भावना करते हुए सेनापति लिखते हैं–

बीती औधि आवन की लाल मन भावन की
डग भई बावन की सावन की रतियाँ।।

विरह दशा में म तो नायिका को कोई वस्तु सुन्दर लगती है, और न ही कोई त्यौहार। विरहावस्था में विरहिणी की मनोदशा का चित्रण करते हुए कविवर रघुनाथ लिखते हैं–

दे कहि मीरसिकारिन को इहि बाग न कोकिल आवन पावै।
मूंदि झरोखनि मंदिर के मलयानिल आय न छावन पावै।।

आये बिना रघुनाथ वसन्त के ऐ बोल न कोऊ सुनावन पावै।
प्यारी को चाहे जियाओ धमार, तौ गाँव में कोऊ न गावन पावै।।

इस प्रकार श्रंगार रस अपने दोनों ही रूपों में लोकजीवन के समक्ष विद्यमान है। वास्तव में शृंगार ही एक ऐसा रस है, जिसमें सभी रसों के अनुभावों एवं विभावों का सामंजस्य हो जाता है। इसलिए शृंगार रस को साहित्य में 'रसराज' पद्वी से सम्मानित किया गया है। रीतियुग के प्रसिद्ध कवि देव ने तो शृंगार को वाणी का सार ही मान लिया, और इससे एक सोपान और ऊपर चढ़ने पर शृंगार की सारी व्यापकता को सीधे नायक नायिका में संपिडित कर दिया। जैसा कि देव लिखते भी है–

देव सबै सुखदायक सम्पति, सम्पति को सुख दम्पति जोरी।
दम्पति दीपति प्रेम प्रतीति, प्रतीति की रीति सनेह निचोरी।।
प्रीति तहाँ गुण रीति विचार, विचार की बानी सुधारस बोरी।
बानी को सार वखान्यो शृंगार, शृंगार को सार किशोर किशोरी।।

सात्विक विधा से समन्वित शृङ्गार रस का विवेचन तो सन्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस में प्राप्त मिलता है। बालकाण्ड में जब विश्वामित्र के साथ राम एवं लक्ष्मण जनकपुर पहुँचते हैं तब जनकपुरवासिनी युवतियाँ उनके सौन्दर्य को निहारने के लिए अपने झरोखों पर आ जाती है।[1] और राम के सौन्दर्य को देखकर कामदेव से भी अधिक सुन्दर बताकर उन्हें सीता के लिए उपयुक्त वर समझती हैं। उधर पुष्पवाटिका में राम एवं लक्ष्मण पुष्पचयन हेतु जाते हैं, तो उसी समय सखियों सहित सीता भी गिरिजा पूजन के लिए जाती है, जिसमें एक सखी सीता का साथ छोड़कर पुष्पवाटिका देखने चली जाती है जहाँ वह राम के सौन्दर्य से मोहित होकर सीता के पास आकर सीता से राम के सौन्दर्य का बखान करती है।[2] सखी द्वारा बताये गये विवरण से सीता भी राम को देखना

---

1. निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई। होंहि सुखी लोचन फल पाई।।
   जुबती भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं।।
   कहहिं परस्पर वचन सप्रीती। शोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं।।
   –रामचरितमानस बालकाण्ड, दोहा–219 के बाद की चौपाइयाँ
2. तेहि दोउ बन्धु विलोके जाई। प्रेम विवश सीता पहिं आई।।
   तासु दशा देखी सखिन्ह, पुलक गात जलु नैन।
   कहु कारन निज हरष कर, पूँछहिं सब मृदु वैन।। 228।।
   स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा–अनयन नयन बिनुबानी।। –रामचरितमानस बालकाण्ड

चाहतीं है।[1] उधर राम भी सीता के मुख को देखकर देखना चाहते हुए भी संकोचवश हृदय में उनकी छवि बसा लेते है।[2] शृङ्गार रस का ऐसा उद्रेक अन्यत्र नहीं मिलता, जब राम सीता के सौन्दर्य से मोहित होकर कह बैठते हैं–

सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई। छविगृँह दीपशिखा जनु बरई।
सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहि पट तरौं विदेह कुमारी।।
सिय शोभा हिय बरनि प्रभु, आपन दसा विचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन, वचन समय अनुहारि।।230।।

उधर राम की दशा देखिये–

करत बतकहीं अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छवि करई मधुप इव पान।।231।।

तो उधर सीता भी राम के रूपराशि को बस एक बार किसी तरह निहारना चाहती हैं–

चितवन चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गये नृप किसोर मन चिन्ता।।
जहँ विलोकि मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी।।
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति छवि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरी निमेषें।।
अधिक सनेह देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।।
लोचन मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।।
जब सिय सखिन्ह प्रेमवस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी।।[3]

शृङ्गार रस की उक्त अवस्था तब और अधिक श्रेष्ठतमा बन जाती है जब किसी

---

1. तासु वचन अति सियहिं सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने।।
   चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखइ न कोई।।

   –वही दोहा 229 के पूर्व की चौपाइयाँ

2. अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा।।
   भए विलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंजल।।
   देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदय सराहत वचनु न आवा।।

   –वही दोहा 229 के बाद की चौपाइयाँ।

3. रामचरितमानस–बालकाण्ड, दोहा–232 के पूर्व की चौपाइयाँ

के कहने पर भी प्रेमी व्यक्ति की तरफ संकोच से देखा जाए जैसा कि सखी के कहने पर सीता ने किया। यथा–

बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूप किसोर देखि किन लेहू।।
सकुचि सीय तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे।।
पुनि आउब एहि बेरियाँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली।।[1]

शृंगार रस का उद्रेक तब देखते बनता है जब धनुष यज्ञ भूमि पर जाती हुई सीता ने राम की तरफ आँखों से नहीं बल्कि मन से देखा यथा–

सीय चकित चित रामहिं चाहा। भए मोहवस सब नर नाहा।।[2]

धनुष तोड़ने जब राम उठते हैं तब सीता की शृंगाररसान्वित अवस्था देखते ही बनती है यथा–

प्रभुहिं चितइ पुनि चितव महिं राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनुविधु मंडल डोल।।[3]

सीता ने तन मन से राम को पति वरण कर लिया था, शायद इसीलिए उनके अंग अधीर हो रहे थे कि राम धनुष तोड़ पायेंगे या नहीं, और इसीलिए वह गिरिजा एवं भगवान से राम की दासी बनाने की प्रार्थना कर रहीं थी, और जब तक राम ने धंनुष तोड़ नहीं दिया तब तक सीता व्याकुल रहीं, एवं शिव धनुष टूटते ही जब जयमाला पहनाने सीता राम के पास पहुँचती हैं तो गोस्वामी जी के द्वारा की गयी शृंगार रस की बरसात देखते ही बनती है यथा–

तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेम लखि परइ न काहू।।
जाइ समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी।।
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई।।
सुनत जुगलकर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।[4]

शृंगार रस के द्विविध पक्षों का विवरण रामचरितमानस में मिलता है। उक्त वर्णन जहाँ संभोग शृङ्गार का विवेचन है, वहीं सीताहरण प्रसंग एवं सीतापरित्याग प्रसंग में शृङ्गार रस के विप्रलम्भ पक्ष का गोस्वामी जी ने बड़ा ही मार्मिक विवेचन किया है।

1. रामचरितमानस–बालकाण्ड, दोहा, 234 के पूर्व की चौपाइयाँ
2. वही दोहा, 248 के पूर्व की चौपाइयाँ
3. वही दोहा, 258
4. रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा–263 के बाद की चौपाइयाँ

शृङ्गाररस को रसराज बनाने में सोलहवीं सत्रहवीं शताब्दी के आचार्य पण्डित जगन्नाथ का महनीय योगदान है, उन्होंने अपने ग्रंथ रसगंगाधर एवं भामिनीविलास में शृङ्गार रस का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया है। भामिनी विलास नामक गीतिकाव्य में चार विलास हैं-प्रथम-अन्योक्ति विलास, द्वितीय-शृगार विलास, तृतीय करुण विलास एवं चतुर्थ शान्त विलास। शृंगार विलास में शृङ्गारस के सम्भोग एवं विप्रलम्भ दोनों पक्षों का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। पण्डितराज के पूर्ववर्ती दशवीं ग्यारहवीं शताब्दी के राजा भोज ने तो शृङ्गार रस के नाम पर ही "शृङ्गारप्रकाश" ग्रन्थ लिख डाला। शृङ्गारप्रकाश में कुल 36 प्रकाश हैं, जिसके ग्यारहवें प्रकाश से 36 वें प्रकाशपर्यन्त शृङ्गारस का भेदोपभेद सहित विवेचन प्राप्त मिलता है। रस विवेचन क्रम में महाराज भोज ने रति, भाव, मोक्षशृङ्गार, धर्म शृंगार, रति के आलम्बन, उद्दीपन विभावों अनुभावों, अर्थशृंगार, कामशृंगार, संयोग तथा विप्रलम्भ, शृंगार आदि के वर्णन प्रसङ्ग में शृंगार रस को सर्वोच्च पद्वी पर बैठाया है।

शृङ्गाररस की चकाचौंध से तो प्राय: सभी आकर्षित होते हैं, परन्तु उससे प्रभावित होकर शृङ्गार रस नाम से ग्रन्थसृजन कर्म करना शृङ्गारस के प्रति आधमर्ण्य व्यक्त करना ही है। संस्कृत वाङ्मय में शृङ्गारसान्वित ऐसी बहुविध काव्यकृतियाँ प्राप्त मिलती हैं जिनमें शृङ्गार रस की नदी की सर्जना कवियों ने की है। उनमें प्राप्त ग्रन्थ एवं ग्रम्थकारों की सूची अधोलिखित है–

क्रम सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार का नाम
1	शृङ्गारमंजरी	राममनोहर
2	शृंगारकलिका	कामराज
3	शृंगारकलिका	हरि
4	शृङ्गारसारसंग्रह	शम्भूदास
5	शृङ्गारसार	कालिदास
6	शृङ्गार तटिनी	भट्टाचार्य
7	शृङ्गारतिलक	कालिदास
8	शृङ्गारतिलक	गागाभट्ट
9	शृङ्गारकल्लोल	रोयभट्ट
10	शृङ्गारमंजरी	मानकवि
11	शृंगारमाला	सुखलालमिश्र

क्रम सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार का नाम
12	शृङ्गारकौतूहल	लालमणि
13	शृङ्गारसोदय	रामकवि पुत्र श्री रामकृष्ण
14	शृङ्गारविलास	वाग्भट
15	शृङ्गार भाण	गीर्वाणेन्द्र
16	शृंगारकोश भाण	कलियुग कालिदास
17	शृंगारशेखर भाण	कलियुग कालिदास
18	शृंगाररत्नाकर	सुन्दरताताचार्य
19	शृंगारशृंगाटक	रंगनाथ
20	शृंगारविलास	देवदत्त
21	शृंगारहार	बलदेव
22	शृंगारसरसी	भावमीमांसा
23	शृंगारसार	वेंकटनारायण दीक्षित
24	शृंगारलता	सुखदेव मिश्र
25	शृंगारसोदधि	सुधाकर पुंडरीकायाजन
26	शृंगारामृतलहरी	सामराज दीक्षित
27	शृंगारचन्द्रिका	श्रीनिवास
28	शृंगारस्तवक	नृसिंह
29	शृंगारजीवन	वरद
30	शृंगारतटिनी	रामभद्र
31	शृंगारसुन्दर	ईश्वर वर्मा
32	शृंगारतरंगिणी	वेंकटाचार्य
33	शृंगारवापिका	विश्वनाथ
34	शृंगारदीपिका	वेंकटाध्वरिन्
35	शृंगारविलास	साम्बशिव
36	शृंगारविलासित	नारायण
37	शृंगारमंजरी	गोपालराय
38	शृंगारराज	गोपालराय

क्रम सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार का नाम
39	शृंगारदीपिका	विंजु मुरी राघवाचार्य
40	शृंगारपवन	विद्यानाथ
41	शृंगाररसोदय	रामकवि
42	शृंगारतिलक	अविनाशी स्वामी
43	शृंगारसर्वस्व	स्वामीशास्त्री
44	शृंगारसशृंगार	इन्द्रगन्ती कोंडसूरि
45	शृंगारमंजरी	विश्वनाथ
46	शृंगारतरंगिणी	जगन्नाथ
47	शृंगारतटिनी	रामदेव चिरंजीव भट्टाचार्य
48	शृंगारतरंगिणी	श्रीनिवासाचार्य
49	शृंगारतरंगिणी	रामभद्र
50	शृंगारतरंगिणी	वेंकटाचार्य
51	शृंगारदीपिका	भानुदत्त
52	शृंगारतिलक	कालिदास तृतीय
53	शृंगारदीपिका	वेंकटाध्वरिन्
54	शृंगारदीपिका(भाण)	राघवाचार्य
55	शृंगारदीपिका	भानुदत्त
56	शृंगारमंजरी(आख्यायिका)	भोज
57	शृंगारमंजरी(काव्य)	रायमनोहर
58	शृंगारमंजरी(काव्य)	मानकवि
59	शृंगारमंजरी(काव्य)	अजितसेन
60	शृंगारमंजरी साहजीय	अप्पादीक्षित
61	शृंगाररस प्रबन्ध दीपिका	हरिहर
62	शृंगाररसमण्डन	विट्ठलेश्वर
63	शृंगारलीलाचरित	नारायण भट्टपाद
64	शृंगारवापिका(नाटिका)	विश्वनाथ
65	शृंगारशतक	भर्तृहरि

क्रम सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार का नाम
66	श्रृंगारशतक	ब्रजराज
67	श्रृंगारशतक	जनार्दन
68	श्रृंगारशतक	नरहरि
69	श्रृंगारशतक	ब्रजराज
70	श्रृंगारवैराग्यतरंगिणी	सोमप्रभाचार्य
71	श्रृंगारनायिकातिलक	कपिस्थलभ कृष्णभाचार्य
72	श्रृंगारपवन	भोज
73	श्रृंगारमंजरी	भोज
74	श्रृंगारप्रकाश	भोज
75	श्रृंगारभेदप्रदीपिका	हरिहर
76	श्रृंगारमंजरी	भोगनाथ
77	श्रृंगारमंजरी	केरलवर्मन
78	श्रृंगारमंजरी	रतिकर
79	श्रृंगारमंजरी	गोपालराय
80	श्रृंगारमंजरी	विश्वनाथ
81	श्रृंगारमंजरी	विश्वेश्वर
82	श्रृंगारशेखर	अभिनयभूषण
83	श्रृंगारशेखर	रामानुज श्रीवत्स
84	श्रृंगारसप्तशती	गोवर्धन
85	श्रृंगारसप्तशती	परमानन्द
86	श्रृंगारसरणि	चित्रधरोपाध्याय
87	श्रृंगारसर्वस्व	स्वामिज्ञास्त्रिन
88	श्रृंगारसर्वस्व	अनन्तनारायण भारद्वाज
89	श्रृंगारसर्वस्व	नल्लाबुंध
89	श्रृंगारसर्वस्व	भूमिनाथ
90	श्रृंगारसर्वस्व	वेदान्ताचार्य
91	श्रृंगारसर्वस्व	राजचूड़ामणि

क्रम सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार का नाम
92	शृंगारसार	वेंकट नारायण
93	शृंगारसारावली	वेंकट नारायण
94	शृंगारसुधाकर	रामवर्मा
95	शृंगारसुधार्णव	रामचन्द्र
96	शृङ्गाराभृ लहरी	सामराज दीक्षित
97	शृंगारकंदुक	गुह

इसके अतिरिक्त शृंगार रस से सम्बन्धित विविध अज्ञातनामा काव्य मिलते हैं, जिनमें प्रमुख हैं–शृंगारचन्द्रोदय, शृंगारकौस्तुभ, शृंगाररसतरंगिणी, शृंगारविधि, शृंगारकल्लोल, शृंगारकोश, शृंगारकौतूहल, शृंगारजीवन, शृंगाररत्नाकर, शृंगाररसोदय, शृंगारलता, शृंगाररसविलास, शृंगारलीलातिलक, शृंगारवाटिका, शृंगारविलसित, शृंगारभूषण, शृंगारसंजीवन, शृंगारशृङ्गाटक, आदि।

यदि मानव में शृंगाररस के सहायक शृङ्गारों या आभूषणों की चर्चा की जाये तो उस संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार वस्त्र, आभरणों, लेपनों इत्यादि द्वारा शरीर को सजाना या अलंकृत करना ही शृंगार है, जो वास्तव में सोलह प्रकार का माना जाता है जैसा कि लोक कहावत– "सोलह शृंगार करके कहाँ जा रही हो" इत्यादि व्यंग्यात्मक वाक्य से प्रतिध्वनित होता है। वे सोलह शृंगार सामग्री अधोलिखित हैं–1 केशसज्जा, 2 शिरोभूषण, 3 कर्णोभूषण, 4 कण्ठहार, 5 केयूर, 6 मेखला, 7 कटक(कंगन, कंकण), 8 मुद्रिका, 9 मञ्जीर, 10 वस्त्राभरण, 11 आलक्तक, 12 भालबिन्दी, 13 अङ्गराग, 14 अञ्जन, 15 कुङ्कुम, 16 इत्र आदि।

यदि शृङ्गारतिलक के रचयिता की बात की जाये, तो ग्रन्थ में ग्रन्थकार श्री कालिदास ने स्वकुल गोत्र सम्बन्धी कोई भी चर्चा नहीं दी है। परन्तु शृङ्गारतिलक की सामग्री से यह तो आकलित होता है कि इसके रचयिता महाकवि कालिदास तो बिल्कुल नहीं है। संभावना यह हो सकती है कि कालिदास की प्रतिभा से प्रभावित किसी अन्य विद्वान् ने उन्हीं के नाम पर शृङ्गारतिलक की रचना कर ग्रन्थ को प्रसिद्धि दिलाने का उपक्रम किया हो, क्योंकि संस्कृत वाङ्मय में विविध कालिदासों की अवस्थिति की संसूचना मिलती है। इस रूप में कालिदास उपाधि धारी कोई कवि रहा हो, जिसने शृंगारतिलक की रचना की हो।

बहुत कुछ संभव है कि जैसे राजा भोज ने 84 विरुद्ध या उपाधियाँ धारण की

थी, संभव है भोज के समकालीन किसी विद्वान् ने भोज रचित शृंगार प्रकाश सदृश ग्रन्थ लिखना चाह रहा होगा, परन्तु वह केवल ग्रंथ का श्रेष्ठ नाम करण करके उससे सम्बन्धित सामग्री जुटाने में असमर्थ रहा हो, चूँकि भोज, दानी, उदार एवं प्रजापालक राजा होने के साथ-साथ सरस्वतीकण्ठाभरण, शृंगारप्रकाश, शृंगारयनन तथा शृंगारमंजरी आदि लगभग 75 ग्रंथों की रचना किये थे जिनका समय ग्यारहवीं शताब्दी माना जाता है।[1] अतएव इनसे परवर्ती कोई अन्य विद्वान् या कालिदास शृंगारतिलक नामक गीतिकाव्य लिखा होगा। जैसा कि-एम० कृष्णभाचारी कहते हैं कि वह कोई कालिदास तृतीय, या कोटिजीत नाम का व्यक्ति रहा होगा, परन्तु उस शृंगारतिलक में वह 23 श्लोक होने की बात करते हैं।[2] जबकि इसमें 31 श्लोक हैं। वाचस्पति गैरोला महोदय शृंगारतिलक, पुष्पबाणतिलक और राक्षसकाव्य इन तीनों गीतिकाव्यों का प्रणेता महाकवि कालिदास से भिन्न कोई दूसरा कालिदास नामधारी कवि को मानते हैं, जिसे वह बारहवीं शताब्दी के बाद का कवि मानते हैं।[3] एवं शृंगारतिलक के सम्पादक सी. आर. देवधर महाकवि कालिदास की रचना मानते हैं। जो सत्य से परे है, क्योंकि महाकवि कालिदास मे मर्यादा की सीमा में ही रहकर काव्यप्रणयन किया है, अमर्यादित अंशों को उन्होंने स्पर्श तक नहीं किया, जब कि इस ग्रन्थ में मर्यादाविहीनता के कई दृष्यान्त शृंगार वर्णन प्रसंग में दृष्टिगोचर होते हैं। निष्कर्षतया यह कहा जा सकता है कि "शृंगारतिलक" नाम से कही ग्रन्थकारों ने रचनाएँ की हैं, परन्तु इस शृंगारतिलक की रचना कालिदास तृतीय या कोटिजीत या अर्कभट्ट ने की होगा। गागाभट्ट या कोटिजीत या अर्कभट्ट एक ही व्यक्ति के चलतू नाम हो सकते हैं जिसने संभवतः

---

1. Bhoja was the celebrated king of the Paramara dynasty. His capital was Dhara. He ascended the throne in A.D. 1018 and had a glorious reign till 1063 A.D.

   –History of Classical Sanskrit Literature,
   Dr. Krishnamacharya, para 515

2. It is again matter for inquiry whether the works faisted on the name of Kalidasa are not tended to ignore the difference in identity. It is likely the works of Kalidasa III or Kotijita.
   Sringaratilak is another poem of Kalidasa in 23 verses of fine sentiments of love and Affection.
   Puspavanavilas is a piece of fine fancies and lyrical beauty. Though ascribed to Kalidasa the real author was Arkabhatta, The writer of sahityakaumudi.

   –History of classical sanskrit Literature
   M.Krishnamacharya. Para-309

3. विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचास्पति गैरोला, पृ. 906

प्रसिद्धि के लिए कालिदास उपाधि धारण की होगी और अर्कभट्ट या कोटिजीत नाम के व्यक्ति संस्कृत गीतिकाव्य साहित्य में प्राप्त नहीं मिलते। अतएव गागाभट्ट ने ही कालिदास (तृतीय) उपाधि प्राप्त कर प्रसिद्धि प्राप्त करने का उपक्रम किया होगा। इस रूप में शृंगार तिलक का रचयिता गागाभट्ट ही सिद्ध होता है, जो गुजरात प्रदेशीय हो सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के आकारित होने में, जिन अदृश्य शक्तियों, ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का मैनें साहाह्य लिया है उनके प्रति मैं अपनी प्रणिमा निवेदित करता हूँ। प्रो. रजेन्द्र मिश्र (अभिराज जी) जी पूर्वकुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में नान्दीवाक् लिखकर कृपा दृष्टि की है एतदर्थ उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। प्रो. रमणीका जलाली जी कलासंकायाध्यक्षा, जम्मूविश्वविद्यालय, जम्मू ने अपने शुभाशीर्वचनम् में जो ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार के प्रति अपनी अभिव्यक्ति दी है, उसके लिए ग्रन्थकार उनके प्रति कार्तज्ञता व्यक्त करता है। प्रो. शंकर, दयाल द्विवेदी, संस्कृत विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने पुरोवाक् लिखकर ग्रन्थकार के सम्मान का अभिवर्धन किया है, अतएव ग्रन्थकार उनके प्रति आधमर्ण्य समर्पित करता हैं। ग्रन्थ में प्रत्यक्ष एवं अपरोक्ष रूप से सहयोग देने वाली सहधर्मिणी श्रीमती मालिनी शुक्ला को भी धन्यवाद एवं शुभाशी: जिनके उत्प्रेरक सद्वचन मुझे सदैव कर्त्तव्यपरायण बनाये रखते हैं। चिरंजीव श्रेयस शुक्ल, चिरंजीव प्रेयस शुक्ल एवं सुपुत्री सुश्री संस्कृति शुक्ला को सस्नेह प्यार एवं शुभाशी:, जिनसे समय बचाकर मैं ग्रन्थसजनकर्म कर पाया। ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए ईस्टर्न बुक लिंकर्स के श्री रवि, लकी एवं उनके अनुज को भी हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने उत्साहपूर्वक ग्रन्थ प्रकाशन में अपना श्रमदान दिया। अन्त में मैं भगवान शिव के प्रति अपनी अनुरक्ति एवं उन पर समर्पित भाव रखते हुए तथा स्वर्गनिवासिनी ममता की प्रतिमूर्ति अपनी माता श्रीमती विद्यावती शुक्ला का स्तवन करते हुए तथा पूज्य पिताजी श्री शिवनाथ प्रसाद शुक्ल के चरणों को प्रणाम करता हूँ, एवं इस ग्रन्थ पुष्प को उन्ही को समर्पित कर मनसंतोष प्राप्त करने की जिजीविषा मन में धारित करता हूँ।

विदुषां वशंवद:

डॉ० रामबहादुर (शुक्ल)

उपाचार्य – संस्कृत विभाग

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

जम्मूतवी –180006

श्री कालिदासविरचितम्

शृङ्गारतिलकम्

मंगलाचरणम्

शिवनाथो पिता यस्य माता विद्यावती (मुदा)।
एतौ पितरावहं वन्दे ग्रंथमाङ्गल्य सिद्धये।। 1।।
सर्वोत्तमा प्रिया यस्य मालिनी नाम संज्ञिका।
क्रियते मालिनी व्याख्या, ध्यात्त्वा हि शारदां हृदि।। 2।।

(नमो कुसुमायुधाय)

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं
श्रोणी तीर्थशिला च नेत्रसफरी धम्मिलशैवालकम्।
कान्तायाः स्तनचक्रवाकयुगलं कन्दर्पबाणानलै-
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम्।। 1।।

अन्वय—विधिना कन्दर्पबाणानलैः दग्धानाम् अवगाहनाय (यः) रम्यं सरः निर्मितम्, (तस्याः) कान्तायाः बाहू द्वौ मृणालम् आस्यकमलं च लावण्यलीलाजलं, श्रोणीतीर्थशिला, नेत्रसफरी, धम्मिलशैवालकम् च (कान्तायाः) स्तनचक्रवाकयुगलं (रूपे विलसति)।

Translation—The Creator has made lovely swimming pool for men, scorched by the fire of the arrows of Kamadeva to dip themselves in it. Her arms of the lovely girls are the lotus-stalks, her face is a lotus, her beauty is the rippling water, her buttacks are the stonesteps in a bathing pool, her eyes are the saphari fish, her hair knot a mass of duckweed, her breasts are a pair of wild geese.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—विधाता (ब्रह्मा) के द्वारा कामदेव के बाणों (अरविन्द,

अशोक, आम्र, नवमल्लिका एवं नीलोत्पल अथवा संमोहन, उन्मादन, शोषण, तापन एवं स्तम्भन अथवा उन्मादन, तापन, शोषण, स्तम्भन तथा सम्मोहन) की अग्नि से आधे जले हुए की भाँति कामुक व्यक्तियों के कलेवर को शान्ति प्रदान करने के लिए 'कान्ता' नाम की सुन्दर सरोवर की रचना की है, जिसकी दोनों भुजाएँ कमलनाल हैं, मुख कमल है, लावण्यमयी लीला का साधन (सरोवर में रहने वाला) जल है, (उसका) कटिभाग, (मानो उस सरोवर में अवगाहन करने के लिए) उतरने के लिए सुन्दर घाट हैं, चंचल दोनों नेत्र मछलियाँ है, एवं माथे पर (आया हुआ) घने बालों का समूह मानो सेवार घास है और (उस सरोवर रूपी) कामिनी के दोनों चुचुक (स्तन) ही मानो चकवा-चकवी के जोड़े के रूप में विहार करते हुए सुशोभित हो रहें हैं।

विशेष–प्रस्तुत श्लोक में कवि ने रूपक अलंकार का प्रयोग किया है

उसका लक्षण है–

1. रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे (साहित्य दर्पण)
2. तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः (काव्यप्रकाश)
3. विषय्यभेदताद्रूप्यरञ्जनं विषयस्य यत्।
   रूपकं तत् त्रियाधिक्य न्यूनत्वानुभयोक्तिभिः।। (चन्द्रालोक)

अर्थात् रूपक अलंकार वहाँ होता है, जहाँ निरपह्नव (निषेध रहित) विषय (उपमेय) में उपमान का आरोप किया जाता है। दूसरे शब्दों में जहाँ उपमेय का अभेद उपमान में भासित होता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। उक्त प्रथम छन्द में कवि ने चेतन लावण्यमयी कान्ता में जड़ पदार्थ सरोवर का आरोप किया है। इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है। यदि कामदेव के बाणों की बात की जाये, तो उससे तो सामान्य एवं विशेष सभी व्यक्ति बाधित होते हैं, और जब स्त्री अपने बाहुवाश में कामातुर व्यक्ति को बाँध लेती है, तो कामातुर का चित्त शान्त हो जाता है। कामदेव के बाणों के विषय में वर्णन मिलता है–

1. अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।
   नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायकाः।।[1]
2. उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा।
   सम्मोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः।।

1. संस्कृत हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे, पृ. 562

3. समोहनोन्मादनौ च शोषणस्तापनस्तथा।
स्तम्भनश्चेति कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः।।[1]

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण है-

(1) सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।। -छन्दोमंजरी

(2) सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

वृत्तरत्नाकार-3/100

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगणः सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तंथा एक गुरु वर्ण आयें, उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं। इस छन्द में सूर्य (=12) तथा अश्व (=7) संख्यक अक्षरों पर यति होती है।

आयाता मधुयामिनी यदि पुनर्नायात एव प्रभुः
प्राणा यान्तु निभानसौ यदि पुनर्जन्मग्रहं प्रार्थये।
व्याधः कोकिलबन्धने विधुपरिध्वंसे च राहुग्रहः
कन्दर्पे हरनेत्रदीधितिरियं प्राणेश्वरे मन्मथः।।2।।

अन्वय–मधुयामिनी आयाता, प्रभुः पुनर्नायात एव, यदि प्राणाः यान्तु विभावसौ (अहं) पुनर्जन्मग्रहं प्रार्थये। कोकिलबन्धने व्याधः, विधुपरिध्वंसे राहुग्रहः च कन्दर्पे हरनेत्रदीधितिः, अयं मन्मथः प्राणेश्वरे (समाविशतु, मथतु वा)।

Translation–When A Hero goes to another place (foreign) stating to his heroin that he will return as soon as possible but the seasion of spring he did not returned to spent his time with his heroin. The Heroin express her views that the sweet night of spring is here, but my lord (Lover or life partner) does not come. So, I shall pray for death. May my life pass-away in the funeral fire and I born again. As the hunter is caught in his own net, or as the planet Rahu in the eclipse of the moon, as the flame of Shiva's eye on the God of love. Therefore I wish that Lord Kamadeva (Love) stirringed the soul of my lord (husband or lover).

मालिनी हिन्दी व्याख्या–उक्त श्लोक में ऐसी नायिका के मनोद्गारों का

1. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ – पृ. 624

विवेचन है जिसमें एक नायक नायिका से यह कहकर (विदेश) अन्यत्र चला जाता है कि वसन्त ऋतु के आते ही वह वापस आ जायेगा, परन्तु वसन्त ऋतु तो आ जाती है किन्तु उसका प्रियतम नहीं लौटता, फलतः वह विरहिणी नायिका विधाता से प्रार्थना करती हुई कहती है कि वसन्त ऋतु तो आ गई, लेकिन मेरे स्वामी अभी तक नहीं लौटे। इसलिए यदि वियोग में मेरे प्राण चले जायँ, तो मैं आपसे फिर जन्म लेने की प्रार्थना करती हूँ, क्योंकि मनुष्य जन्म लेकर यदि मैं शिकारी बनूँ जिससे कोयल (कुहू-कुहू की ध्वनि कर मेरा वियोग बढ़ाने वाली एवं मुझे रुलाने वाली) को बन्धन (तीर कमान से मारकर सजा) दे सकूँ। और यदि आकाश में ग्रह बनूँ, तो राहु बनकर चन्द्रमा को ग्रसूँ (क्योंकि चन्द्रमा अपनी चाँदनी से मेरे वियोग को दुगुना कर मुझे दुःख पहुँचा रहा है), और यदि आप मुझे अग्नि देवता बनायें, तो मैं भगवान शिव के तृतीय नेत्र की ज्वाला बनूँ, (ताकि मैं 'काम' को राख कर सकूँ, क्योंकि इसी कामदेव के चलते मैं दुःखी हूँ): और यदि आप मुझे (यह) कामदेव ही बनायें, तो फिर मैं अपने स्वामी के हृदय में प्रवेश कर उनके मन को मथती रहूँ (जिससे उन्हें यह अनुभूति हो सके कि काम की वेदना कितनी तीक्ष्ण और असहनीय होती है।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण पूर्ववत् है।

इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन
कुन्देन दन्तमधरं नवपल्लवेन।
अङ्गानि चम्पकदलैः स विधाय वेधाः
कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः।।3।।

अन्वय—वेधाः (तव) नयनं इन्दीवरेण, मुखम् अम्बुजेन, दन्तं कुन्देन अधरं नवपल्लवेन, अङ्गानि चम्पकदलैः (निर्माय), सः कथं तव चेतः उपलेन घटितवान्।

Translation—When A Hero want to dip in the love of her Heroin, but Heroin rejects his thrust of discourse, Then Hero states his veiws that creator fashioned your eyes with blue lotus, your face with the white lotus, your teeth with the flowers of champaka's blossoms, having made all these in this way, why O my lovely girl? did he (creator) create your heart with stone?

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कामोत्सुक नायक के बहुत मनाने पर भी जब कोई

नायिका नायक के प्रस्ताव को नहीं मानती तब नायक उलाहना देते हुए कहता है कि हे प्रिये (कान्ते)! विधाता (ब्रह्मा) ने नीले कमलों से तुम्हारे नेत्रों का, सफेद कमल से तुम्हारे मुख का, कुन्द के सफेद फूलों से तुम्हारे दाँतों का, नवपल्लव से तुम्हारे अधर का, चम्पा के (पीले) फूलों (दलों) से तुम्हारे शरीराङ्गो का निर्माण किया, तो उसी विधाता ने कैसे तुम्हारे चित्त को पत्थर (जैसा कठोर) बना दिया। अर्थात् विधाता की रचनादृष्टि मेरी समझ में नहीं आ रही है।

प्रस्तुत श्लोक में अतिशयोक्ति अलंकार है। उसका लक्षण है–

1. सिद्धयत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते–साहित्यदर्पण
2. रूपकातिशयोक्तिः स्यान्निगीर्याध्यवसानतः।
   पश्य नीलोत्पलद्वन्द्वान्निस्सरन्ति शिता शराः।। – चन्द्रालोक
3. विषयिणा विषयस्य निगरणमतिशयस्तस्योक्तिरतिशयोक्तिः–रसगङ्गाधर

अर्थात् अध्यवसाय के सिद्ध अर्थात् निश्चित होने पर ही अतिशयोक्ति अलंकार होता है और यह तो स्पष्ट तथ्य है कि विषयी (उपमान) के द्वारा विषय (उपमेय) का निगरण करके दोनों के पारस्परिक अभेद ज्ञान को ही अध्यवसाय कहा जाता है।

उक्त श्लोक में वंशस्थ छन्द है। उसका लक्षण है–

1. जतौ तु वंशस्थमदीरितं जरौ। –वृत्तरत्नाकर - 3/46
2. वदन्ति वंशस्थ बिलं जता जरौ। –छन्दोमंजरी - 2/4

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण जगण तथा रगण प्राप्त मिलते हैं, उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं। इस छन्द के चरणान्त मे यति होती है।

एको हि खञ्जनवरो नलिनीदलस्थो
दृष्टः करोति चतुरङ्गबलाधिपत्यम्।
किं मे करिष्यति भवद्वदनारविन्दे
जानामि नो नयनखञ्जनयुग्ममेतत्।।4।।

अन्वय–(यदा) हि एको नलिनीदलस्थो खञ्जनवरो दृष्टः करोति, (तदा सः) चतुरङ्गबलाधिपत्यम् (प्राप्नोति), भवद्वदनारविन्देनयनखञ्जनयुग्ममेतत् किं मे करिष्यति, नो जानामि।

Translation–When a Affectionate saw a lovely girl who has pasted soot (collyrium) in her eyes, then he says to her– That when a single wagtail sitting on a lotus leaf, Could work more hevoc than a host of four discisions, what pair of eyes, on your lotus face will do to me in future. I do not know in this time.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कोई कामी व्यक्ति जब किसी अञ्जन लगे नयनों वाली (कजरारी आँखों वाली) स्त्री को देखता है, तो वह उसके रूपसौन्दर्य पर व्यामोहित हो पूँछ बैठता है कि हे ललने ! शकुनविज्ञान के अनुसार जब कोई व्यक्ति कमलिनी के पत्तों पर बैठे एक भी खञ्जन पक्षी को देखता है, तो वह चतुरङ्गिणी सेना का प्रधान बनता है, परन्तु आज मैं तुम्हारे मुख कमल पर बैठे हुए दो खञ्जन पक्षियों (दो कजरारे नेत्रों) को देख रहा हूँ, तो मुझे इसका क्या फल मिलेगा मैं नहीं जानता।

शकुनविदों की मान्यतानुसार यदि कोई व्यक्ति घोड़ा, हाथी सर्प, कमल, गौ या बैल तथा खञ्जनपक्षी को पूर्वाह्न समय (प्रातःकाल) देखता है, तो उसे राजपद की प्राप्ति होती है। यथा–

तुरङ्गमातङ्गमहोरगेषु सरोजगोच्छत्रवृषेषु येन।
पूर्वे च दृष्टोऽहनि खञ्जरीटो निःसंशयं तस्य भवेन्नृपत्त्वम्।।

उक्त छन्द में स्त्री के अञ्जन लगे नेत्रों पर खञ्जनपक्षी का आरोप किया गया है। अतएव रूपक अलंकार है। परिभाषा पूर्व (प्रथम श्लोक) में दी जा चुकी है। उक्त श्लोक में बसन्ततिलका छन्द है। जिसका लक्षण है–

1. उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौगः। –वृत्तरत्नाकर – 3/79
2. ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौगः। –छन्दोमंजरी

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण आये, उसे वसन्ततिलका छन्द कहा जाता है। आचार्य काश्यप इसे सिंहोन्नता तथा आचार्य सैतव इसे उद्धर्षिणी छन्द कहते हैं।

ये ये खञ्जनमेकमेव कमले पश्यन्ति दैवात्क्वचि–
त्ते सर्वे कवयो भवन्ति सुतरां प्रख्यातपृथ्वीभुजः।
त्वद्वक्राम्बुजनेत्रखञ्जनयुगं पश्यन्ति ये ये जना–
स्ते ते मन्मथबाणजालविकला मुग्धे किमित्यद्भुतम्।। 5।।

अन्वय—ये ये दैवात् क्वचित् कमले एकमेव खञ्जनं पश्यन्ति, ते सर्वे कवयो भवन्ति, (अथवा) सुतरां प्रख्यातपृथ्वीभुजः (भवन्ति)। मुग्धे! ये ये जनाः त्वद्वक्राम्बुजनेत्रखञ्जनयुगं पश्यन्ति, ते ते मन्मथबाणजालविकला किम्? इति अद्‌भुत्।

Translation–The poet says seeing a beautiful lovely Girl that all those persons, who see by chance, even a single wagtail sitting on a lotus leaf, they grow as- famous as mighty kings, But all those who see your wag-tail eyes on your lotus-face become powerless. O Lovely girl! They tangle with the Kama's arrows. Is this a matter for amazement?

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सुन्दर ललना को देखकर कामार्त्त नायक के मन्तव्य को समझकर) कवि कहता है कि जो व्यक्ति भाग्यवश कहीं कमल के ऊपर बैठे हुए एक भी खञ्जनपक्षी को देख लेते हैं, वे सभी या तो कवि हो जाते हैं अथवा प्रसिद्ध राजा होते हैं। (लेकिन) हे बाले! जो जो व्यक्ति तुम्हारे मुखारविन्द पर अवस्थित एक ही अपितु दो-दो खञ्जनपक्षी (कजरारे नेत्र युगल) को देख लेते हैं, वे सभी कामदेव के बाणों से व्याकुल हो जाते हैं, यह एक आश्चर्य की बात है।

उक्त श्लोक में अतिशयोक्ति अलंकार के विवरण के साथ-साथ शकुनशास्त्रीय विवरण की झलक मिलती है, तथा इसमें- शार्दूलविक्रीडित छन्द है जिसका प्रथम श्लोकवत् लक्षण है।

झटिति प्रविश गेहे मा बहिस्तिष्ठ कान्ते
ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः।
तव मुखमकलङ्कं वीक्ष्य नूनं स राहु-
र्ग्रसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय॥6॥

अन्वय—कान्ते! बहि मा तिष्ठ, गेहे झटिति प्रविश, शीतरश्मेः ग्रहणसमयवेला वर्तते, तव अकलङ्कं मुखं वीक्ष्य, स राहुः नूनं पूर्णचन्द्रं विहाय तव मुखेन्दुं ग्रसति।

Translation–O My (heart or) Lovely girl! do not stand out, go at once in to your house. The hour of moon-eclipse is at hand. That Rahu, who sees your spotless beautiful face, will surely abandon the moon and swallow your moon-face.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—अपनी प्रियतमा को बाहर बैठा देख कोई नायक जब

कामार्त्त होकर अपनी प्रेयसी को सङ्केतस्थान पर आने को कहता है उसी अवस्था का चित्रण करते हुए कवि नायकमुखेन कह रहा है कि हे वरानने! बाहर मत बैठो? जल्दी घर के अन्दर प्रवेश करो, क्योंकि इस समय चन्द्रग्रहण का समय है। (नहीं तो), तुम्हारे निष्कलङ्क मुख को देखकर वह राहु (शीघ्र या निश्चय ही) पूर्णिमा के चाँद को छोड़कर तुम्हारे मुखचन्द्र को ग्रस लेगा।

प्रस्तुत श्लोक में नायिका के मुख पर चन्द्रमा का आरोप किया गया है, अतएव रूपक अलंकार की छटा है। साथ ही मालिनी छन्द है, जिसका लक्षण है–

1. ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। –वृत्तरत्नाकर, 3/87
2. ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः– छन्दोमंजरी

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण्ण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, तथा यगण आये, साथ ही भोगी अर्थात् नाग (=8), तथा लोक (=7) संख्यक अक्षरों पर यति हो, उसे मालिनी छन्द कहते हैं।

कस्तूरीवरपत्रभङ्गनिकरो भ्रष्टो न गण्डस्थले
नो लुप्तं सखि चन्दनं स्तनतटे धौतं न नेत्राञ्जनम्।
रागो न स्खलितस्तवाधरपुटे ताम्बूलसंवर्धितः
किं रुष्टासि गजेन्द्रमत्तगमने किं वा शिशुस्ते पतिः।। 7।।

अन्वय–सखि! गण्डस्थले कस्तूरीवरपत्रभङ्गनिकरो न भ्रष्टो? स्तनतटे चन्दनं न लुप्तं? नेत्राञ्जनं न धौतं? ताम्बूलसंवर्धितः रागो तवाधरपुटे न स्खलितः? गजेन्द्रमत्तगमने किं रुष्टासि? किं वा ते पतिः शिशुः (अस्ति)।?

Translation–A Beautiful women talking to her sakhi (women friend) (seeing her body) says that o darling! the mass of leaf-patterns painted with the finest musk has not fallen from your cheeks and the sandal paste on the curves of your breasts has not broken off. Also the collyrium in your eyes has not been washed away. The red colour deepened by checking betel has not come off from your lips. O friend! whose intoxicated gait is like that of a king! elephant, why are you in rage? Are you sure that your husband still a little boy?

मालिनी हिन्दी व्याख्या–पति के प्रवास से लौटने पर, रात्रि में शयन एवं समागम स्वाभाविक तथ्य है, परन्तु जब किसी नायिका की रात्रि संलाप मे ही व्यतीत हो जाती है, एवं उसका शारीरिक सौन्दर्यवर्धक लेपन जस का तस रहता है, तब प्रात:काल उसकी सहेलियाँ उससे उत्सुकता या हँसीमजाक वश यूँ ही पूँछ लेती हैं कि हे सखी तुम्हारे गण्डस्थल (गालों) पर बनाई गयी कस्तूरी से निर्मित पत्ररचना (लेप) अभी तक खण्डित नहीं हुई है, और न ही तुम्हारे स्तनों चन्दन का लेप लुप्त हुआ है, तथा न ही आँखों का काजल धुल (कमजोर हुआ) पाया है, और न ही ताम्बूलभक्षण से संवर्धित अधर की लालिमा स्खलित हुई (टूटी-फूटी) है, जब कि यदि आलम्बन, चुम्बन, नखच्छेदन, दन्तछेदन आदि (सम्भोग) समागम के पूर्व के कृत्य किये गये होते, तो उक्त सभी तथ्य मलिन हो गये होते परन्तु वे सब पूर्ववत् हैं, अतएव निश्चित ही हे गजगामिनि! या तो तुम अपने पति पर नाराज होकर समागम में नहीं रमीं होगी अथवा तुम्हारा पति अभी कम उम्र का नादान बालक ही होगा, जो कामकलाएँ नहीं जानता। ऐसे कथन से वह अपनी सहेली के समागम न होने के कृत्य को उजागर करती दिखती है।

उक्त श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है जिसका लक्षण पूर्ववत् समझंना चाहिए।

नाहं नो वल्लभश्च कुपितः सुप्तो न वा सुन्दरो
वृद्धो नो न च बालकः कृशतनुर्न व्याधितो नो शठः।
मां दृष्ट्वा नवयौवनां शशिमुखीं कन्दर्पबाणाहतो
मुक्तो दैत्यगुरुः प्रियेण पुरतः पश्चाद्गतो विह्वलः।। 8।।

अन्वय–अहं न वल्लभश्च कुपितः, न कुपितः, न सुप्तः न वा सुन्दरो वृद्धो न च बालकः, न कृशतनुः, न व्याधितः, न शठः। मां शशिमुखीं नवयौवनां च दृष्ट्वा, कन्दर्पबाणाहतो प्रियेण दैत्यगुरुः पुरतः मुक्तो, पश्चाद् विह्वलः गतो।

Translation–On the (said) comment of the lady friend, the lovely Lady replied that o my darling! I was not angry on my lover (husband), nor my lover was angry on me. My lover did not sleep in the night. That rogue is neither old nor young, nor week nor ailing. When he, the love's planet, saw me in my youthful bloom with my face like the moon, his love was aroused at first, but being eclipsed by my husband, he leave me and went away with alarmed heart.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–अपनी सखी को उत्तर देती हुई नायिका कहती है कि न तो मैं अपने प्रियतम पर क्रुद्ध थी, और न ही मेरे प्रियतम मुझ पर नाराज, हाँ मेरे प्रियतम रात्रि में मेरे साथ सुखपूर्वक सो नहीं पाये, जब कि वह न तो वृद्ध हैं, न बालक हैं, न दुबले पतले हैं, और न ही किसी रोग से व्यथित, और न ही वह शठ या छलिया है, लेकिन जब उन्होंने मुझ नयी नवेली जवान युवती एवं चन्द्रमुखी को देखा, तो उनका प्रेम (स्खलन–शुक्र) पहले ही वह गया अर्थात् वह स्खलित हो गये, एतदर्थ मुझे छोड़कर विह्वल होकर बाहर चले गये।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण प्रथम श्लोक की व्याख्या में द्रष्टव्य है।

समायाते कान्ते कथमपि च कालेन बहुना
कथाभिर्देशानां सखि रजनिरर्धं गतवती।
ततो यावल्लीला कलहकुपितास्मि प्रियतमे
सपत्नीव प्राची दिगियमभवत्तावदरुणा।। ९।।

अन्वय–सखि! कथमपि बहुना कालेन च कान्ते समायान्ते, कथाभिर्देशानां अर्धं रजनिः गतवती। ततो प्रियतमे यावल्लीलाकलहकुपितास्मि, प्राची दिगियमभवत्तावदरुणा सपत्नीव (आगता)।

Translation–Stating her women friend, the lovely girl also said, O my dear friend! when my husband returned from foreign after a long time, half the night was spent on traveltales. Thereafter My husband was engaged with me for foreplay and while I pretiended to be angry on him, the eastern quarter as if my co-wife become red, or by then it was morning.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–अपनी महिला मित्र से संलाप करती हुई ललना कहती है कि हे सखी! बहुत दिनों के बाद जब किसी तरह मेरे पति विदेश से वापस घर लौटे, तो विभिन्न देशों की कथाएँ सुनते–सुनाते, एवं मेरे लिए लायी गयी वस्तुओं की कथावार्ता में आधी रात्रि व्यतीत हो गयी। इसके बाद जब मेरे प्रियतम प्राक्प्रणय क्रीड़ा में संलग्न हुए, तो मैं उन पर क्रुद्ध हो गयी अर्थात् रूठ गयी, तब तक पूरब दिशा मेरी सौतन बनकर आ गयी, अर्थात् सुबह (प्रातःकाल) हो गयी।

उपर्युक्त श्लोक में शिखरिणी छन्द है, जिसका लक्षण है-

1. रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी। -वृत्तरत्नाकार- 3/93
2. रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी। -छन्दोमंजरी

अर्थात् जिस छन्द में रस (=6), तथा रुद्र (=11) संख्यक अक्षरों के बाद यति होती है, साथ ही क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, तथा एक लघु एवं एक गुरु वर्ण आता है, वहाँ शिखरिणी छन्द होता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।

श्लाघ्यं नीरसकाष्ठताडनशतं श्लाघ्यः प्रचण्डातपः
क्लेशः श्लाघ्यतरः सुपङ्कनिचयैः श्लाघ्योऽतिदाहोऽनलैः।
यत्कान्ताकुचपार्श्वबाहुलतिकाहिन्दोललीलासुखम्
लब्धं कुम्भवर त्वया नहि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते।। 10।।

अन्वय–हे कुम्भवर! नीरसकाष्ठताडनशतं श्लाघ्यं, प्रचण्डातपः श्लाघ्यः, सुपङ्कनिचयैः क्लेशः श्लाघ्यतरः, अतिदाहोऽनलैः श्लाघ्यः, (यतो हि = कुम्भवर)! यत्कान्ताकुचपार्श्वबाहुलतिकाहिन्दोललीलासुखं त्वया (सम्प्रति) लब्धम्, न हि सुखं दुःखैविना लभ्यते।

Translation–Seeing a womon, who has a earthen pot on her breast. An amorous person addressed the said pot, stating that now you are very Lucky, although hundreds of lashings with dried sticks, the sun's fierce heat, the pain arising from the shoping of clay, the heat of fire, such hardships are welcome by you and then the delightful bliss in the swing of her vine-like arms has been obtained by you in this time, O Lucky earthen pot! It is true that pleasure can not be had until one suffers for it.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–काँख में घड़े को दबाकर चलने वाली नायिका के सौन्दर्य पर रीझे हुए किसी सौन्दर्य प्रेमी के डाह (ईर्ष्या) की प्रतिक्रिया उक्त श्लोक में दिखलायी पड़ती है, जिसमें घड़े के सौभाग्य को सराहते हुए एवं उसके पूर्व में व्यतीत कष्टों को परिगणित करते हुए कवि कहता है कि हे घटश्रेष्ठ! आपने (अपने रूप को धारण करने के लिए) सैकड़ों सूखी लकड़ियों कोयला या उपलों के कष्ट

को जो सहन किया, वह श्लाघनीय था, जो प्रचण्ड आतप (आँच) सही, वह भी श्लाघनीय था, जो मिट्टी समूह को गीली करके उसे बार-बार ताड़न करके रूप पाने में जो कष्ट सहा, वह भी प्रसंशनीय था, अत्यधिक तेज अग्नि के ताप (घट को पकाने मे प्रयुक्त) को सहन किया, वह भी प्रशंसनीय था क्योंकि हे घटश्रेष्ठ! जो आज तुम इस लावण्यमयी ललना कें कुच के पास बैठकर उसकी बाहुलता में हिंडोले (झूले जैसा) जैसा लीलासुख ले रहे हो, वह शायद पूर्व में सहन किया गये कष्टों का फल है। वास्तव में विना दुःख सहे सुख नहीं मिलता।

प्रस्तुत श्लोक में पण्डितराज जगन्नाथ के साथ घटी घटना स्मरण हो आती है, जिसमें शिर के ऊपर एवं पार्श्व भाग (बगल) में दबाये हुई दो घटों को लेकर मन्थर गति से चलने वाली यवनकन्या पर आशक्त होकर, औरंगजेब से पण्डिराज ने उस कन्या की याचना की थी। "न याचे गजालिं न वा वाजिराजं ...... लवङ्गी कुरंगी दृगङ्गी करोतु" के आधार पर इस घटना की परिपुष्टि मिलती है बाद भले ही जगन्नाथ को अप्ययदीक्षित जैसे विद्वानों की आलोचना का शिकार बनना पड़ा हो, जाति से च्युत कर दिये गये हों, एवं अन्त में अपनी मोक्ष प्राप्ति के लिए उन्हें माँ गङ्गा याद आई हो, जैसा कि उनकी "गङ्गालहरी" रचना में निदशिति मिलती है।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीड़ित छन्द है, जिसका लक्षण पूर्ववत् समझना चाहिए।

किं किं वक्त्रमुपेत्य चुम्बसि बलान्निर्लज्ज लज्जा न ते
वस्त्रान्तं शठ मुञ्च मुञ्च शपथैः किं धूर्त वाग्बन्धनैः।
खिन्नाहं तव रात्रिजागरतया तामेव याहि प्रियां
निर्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरे का षट्पदानां रतिः ।। 11 ।।

अन्वय–किं निर्लज्ज! बलात् वक्त्रमुपेत्य चुम्बसि, ते लज्जा न? धूर्त! वस्त्रान्तं मुञ्च मुञ्च, शठ! वाग्बन्धनैः शपथैः किम्? तव (कारणेन) रात्रिजागरतया खिन्नाहं, तामेव प्रियां याहि। निर्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरे षट्पदानां का रतिः (भवति)?

Translation–When a Hero leaves his Heroin and goes for inter course to another Heroin and his real Heroin Knew all thing after the returning of her husband in Dawn, she said to her husband, O shameless! why do you come close to my face and kiss it by force? Are you not ashamed? Leave the

end of my clath. I rogue, in vain, are your protestations. You knave! you have dececived me. I am weary by keeping awake at night. Go to her, then who is your love? can the bee take pleasure in the heap of flowers that are faded and torn?

मालिनी हिन्दी व्याख्या–अभिसरण कर्म करके लौटे हुए अपने नायक को देखकर तथा सम्भोगोपरान्त उसके शरीर पर अवस्थित चिह्नों को देखकर नायिका क्रोध में उसे दुत्कारती हुई कहती है कि हे बेशर्म! जबरदस्ती मेरा मुँह चूमते हो, अब तुम्हें लज्जा नहीं आती। धूर्त! अब मेरा आँचल छोड़ो (क्योंकि नायिका क्रोध के कारण उसके पास नहीं रहना चाहती, और नायक बार-बार उसका आँचल पकड़कर उससे क्षमा माँग रहा है, फिर भी वह क्षमादान नहीं दे रही है)! अब तरह-तरह की शपथ लेने से क्या फायदा? तुम्हारे कारण मैं रात्रि भर जागती रही, इसलिए मैं खिन्न हूँ। अब अपनी उसी प्रिया के पास जाओं (मैं तुम्हारी प्रिया नहीं रही) क्योंकि निर्माल्य (बासी फूल, या देव प्रतिमा से उतारे हुए फूल या माला) पर भौंरों की गति या प्रेम कभी नहीं होता?

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीड़ित छन्द है। लक्षण पूर्ववत् समझना चाहिए।

वाणिज्येन गतः स मे गृहपतिवार्तापि न श्रूयते
प्रातस्तज्जननी प्रसूततनया जामातृगेहं गता।
बालाहं नवयौवना निशि कथं स्थातव्यमेकाकिनी
सायं सम्प्रति वर्तते पथिक हे! स्थानान्तरं गम्यताम्।। 12।।

अन्वय–मे गृहपतिः वाणिज्येन (बहिः) गतः, (तस्य) वार्तापि न श्रूयते। प्रातः तज्जननी प्रसूततनया जामातृगेहं गता। अहं नवयौवना बाला, कथं निशि एकाकिनी स्थातव्यम्। हे पथिक! सम्प्रति सायं वर्तते, स्थानान्तरं गम्यताम्।

Translation–An unchaste women express her views seeing a affectionate passenger, indirectaly stating that My husband has gone on a business tour. Even report of him has not been heard. His mother has gone to the house of her son-in-law in the morning as her daughter has given birth of child. I am young with the fresh bloom of youth. Now could I receive you as I am alone in the night? It is evening now. Be gone, O Traveller! some where else.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कोई कुलटा नायिका किसी कामी पथिक को देखकर अप्रत्यक्ष रूप से अभिसरण कर्म करने का संकेत करती हुई कहती है कि हे- पथिक! मेरा पति तो व्यापार के लिए विदेश गया हुआ है, एवं अभी तक उसके आने का कोई समाचार भी नहीं मिला है। आज प्रातःकाल ही उसकी माता बच्चे को जन्म देने वाली अपनी पुत्री के पास दामाद के घर चली गयी है। मैं नवयौवना वाला हूँ, तो भला कैसे मैं रात्रि में घर में अकेली रहूँगी? और इस समय सायंकाल हो रहा है, इसलिए तुम कहीं और चले जाओ। उक्त तथ्य से नायिका पथिक को संकेत कर रही है कि तुम मेरे यहाँ रह सकते हो, क्योंकि मेरा घर सुनसान है, कामकेलि में किसी प्रकार की बाधा भी नहीं आयेगी।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है। लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

यामिन्येषा बहुलजलदैर्बद्धभीमान्धकारा
निद्रां यातो मम पतिरसौ क्लेशितः कर्मदुःखैः।
बाला चाहं खलु खलभयात्प्राप्तगाढप्रकम्पा
ग्रामश्चौरैरयमुपहतः पान्थ निद्रां जहीहि।। 13।।

अन्वय–एषा यामिनि बहुलजलदैर्बद्धभीमान्धकारा, असौ मम पतिः कर्मदुःखैः क्लेशितः निद्रां यातो। अहं च खलु बाला, खलभयात्प्राप्तगाढप्रकम्पा, ग्रामद्चौरैरयमुपहतः, (हे) पान्थ! निद्रां जहीहि।

Translation–An unchaste women indicate the desirous passenger to spent time frequently with her, stating that (O passenger!) the night is overcast by fearful and dark clouds. My husband is exhausted his energy by the weariness of day's labour and has gone to sleep. Indeed. I am young girl but I am seized by a violent trembling through the fear of village rogues. the village is beset by thieves. O passenger! Leave your sleep at night.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कोई स्वच्छन्दविहारिणी नायिका मार्ग से गुजरने वाले पथिक को संकेतित करती हुई उससे रात्रि अपने साथ व्यतीत करने की अभीप्सा व्यक्त करती हुई कहती है कि हे पथिक! यह रात्रि अत्यधिक बादलों से घिरी हुई है, घनघोर अंधेरा भी हो गया है तथा मेरे पति दिन में अत्यधिक काम करने

से थक कर सो गये हैं और मैं एक नौजवान वाला हूँ लेकिन दुष्ट व्यक्तियों के भय से मैं काँप जाती हूँ। इस गाँव में चोरों का आतंक भी है इसलिए हे राहगीर! अपनी निद्रा छोड़ दो।

प्रस्तुत श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द है जिसका लक्षण है–

1. मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्मौं नतौ ताद् गुरू चेत्। –वृत्तरत्नाकर – 3/97
2. मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्। –छन्दोमंजरी

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण आयें और जलधि (=4), षट् (=6), तथा अग (कुलपर्वत=7), संख्यक वर्णों पर यति हो वहाँ मन्दाकान्ता छन्द होता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं। महाकवि कालिदास रचित मेघदूत इसी छन्द में सृजित है।

क्व भ्रातश्चलितोऽसि? वैद्यकगृहे किन्तद्रुजां शान्तये
किं ते नास्ति सखे गृहे प्रियतमा सर्वं गदं हन्ति या।
वातं तत्कुचकुम्भमर्दनवशात् पित्तं तु वक्त्रामृतात्-
श्लेष्माणं विनिहन्ति हन्त सुरतव्यापारकेलिश्रमात्।। 14।।

अन्वय–भ्रातः क्व चलितोऽसि? वैद्यकगृहे। किम्? तद्रुजां शान्तये। सखे! किं ते गृहे प्रियतमा नास्ति? या सर्वं गदं हन्ति? वातं तत्कुचकुम्भमर्दनवशात्, पित्तं तु वक्त्रामृतात्, हन्त श्लेष्माणं सुरतव्यापारकेलिश्रमात् विनिहन्ति।

Translation–With the series of question and answer, A person advice to another person to take pleasure by foreplay and intercourse with his half partner. He says O brother! where are you rushing off to? person answered. To the doctor's house. But is that conductive to recavery? Have you no sweet heart at home? who could cure your illness-your excess of wind by the pressure of her round breasts; your bile by the nector-breath of her mouth and your phlegm by the exertion of love-making.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–प्रश्नोत्तर विधा में कामकेलि को अपनाने की दीक्षा देता हुआ एक व्यक्ति दूसरे से पूँछता है अरे भाई कहाँ जा रहे हो? तो उत्तर मिलता

है वैद्य के घर। क्यों? तो रोग शमनार्थ। क्या तुम्हारे घर में तुम्हारी प्रियतमा नहीं है, जो सभी रोगों को दूर कर सकती है? (क्योंकि रोग तो वात-पित्त और कफ की विषमता से उत्पन्न होते हैं और यदि बात रोग है तो (अपनी प्रियतमा के) कुचकुम्भों का मर्दन करो, यदि पित्त रोग है, तो अपनी प्रिया के अधरोष्ठ रूप अमृत का पान करो, तथा यदि कफ (श्लेष्मा) है तो कामक्रिया या रति केलि में किये गये परिश्रम से, सभी रोग रोग सद्यः भाग जायेंगे।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

यत्त्वन्नेत्रसमानकान्तिसलिले मग्नं तदिन्दीवरं
मेघैरन्तरितः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी।
येऽपि त्वद्गमनानुसारिगतयस्ते राजहंसा गता-
स्त्वत्सादृश्यविनोदमात्रमपि मे दैवेन न क्षम्यते।। 15।।

अन्वय–प्रिये! तदिन्दीवरं यत्त्वन्नेत्रसमानकान्तिसलिले मग्नं, तव मुखच्छायानुकारी शशी मेघैरन्तरितः, येऽपि त्वद्गमनानुसारिगतयस्ते राजहंसाः गताः, त्वत्सादृश्यविनोदमात्रमपि मे दैवेन न क्षम्यते।

Translation–In the time of Rain. A Hero express his grief due to separation of his life partner that O My darling! that blue lotus which resembles your eyes is sunk into the water. The Moon who imitates the beauty of your face is hidden by the clouds. Even those royal swans whose style of walking was copied from your gait have left. Alas! even a small measure of pleasure with some one like you has not been granted to me by creature.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–अपनी प्रिया के वियोग में व्यथित विरही वर्षा ऋतु आने पर अपने दुःख को व्यक्त करते हुए कहता है कि हे प्रिये! जो इन्दीवर (नीलकमल), तुम्हारे नेत्रों के समान कान्तिमान थे, वे अब जल में डूब गये। तुम्हारे मुख की परछायीं का नकल करने वाला चन्द्रमा मेघों के द्वारा छिपा (दबा) दिया गया। इसी प्रकार जो जो तुम्हारी मन्दगति का अनुसरण करने वाले राजहंस थे, वे भी

(इस क्षेत्र को छोड़कर मानसरोवर) चले गये। तुम्हारे समान वस्तु विशेष से जो मेरा मनोविनोद हो जाता था, वह भी विधाता को सहन नहीं हैं।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है। इसमें अतिशयोक्ति अलंकार की छटा दिखलायी पड़ती है।

चन्द्रश्चण्डकरायते मृदुगतिर्वातोऽपि वज्रायते
माल्यं सूचिकुलायते मलयजालेपः स्फुलिङ्गायते।
आलोकस्तिमिरायते विधिवशात्प्राणोऽपि भारायते
हा हन्त प्रमदावियोगसमयः कल्पान्तकालायते।।16।।

अन्वय–(प्रमदा वियोग समये) चन्द्रश्चण्डकरायते, मृदुर्गतिर्वातोऽपि वज्रायते, माल्यं सूचिकुलायते, मलयजालेपः स्फुल्ङ्गायते, आलोकस्तिमिरायते, विधिवशात् प्राणोऽपि भारायते, हा हन्त! प्रमदावियोगसमयः कल्पान्तकालायते।

Translation–The poet described the aloneness of the Hero due to separation of his heroin. He feels that the moon scorches like the sun. The gentle breeze is fierce as Indra's bolt. The Garland pricks him like a heap of needles; sandal paste turns into a burning coal. Daylight becomes dark, by the adverse power of fate, life itself becomes a burdon. Alas! the separation from my beloved life partner is like the end of a kalp.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कान्ता वियोग काल में (नायक को) चन्द्रमा की शीतल किरणें भी (सूर्य की किरणों के समान) प्रचण्ड गर्मी देती हैं, शीतल एवं मन्द गति से बहने वाली हवा वज्र के समान चोट पहुँचाती है। फूल की मालाएँ सुई की तरह हृदय (कलेजे) को छेदती हैं। मलयागिरि चन्दन का लेप भी मानो आग की चिनगारी के समान देह में जलन उत्पन्न करता है। प्रकाश में उसे अन्धकार ही नजर आता है। भाग्यवश उसे अपनी जिन्दगी भी बोझ मालूम होती है। बहुत ही दुःख की बात है कि प्राणेश्वरी (प्रमदा) का वियोग कल्पान्त अर्थात् प्रलय की तरह प्रतीत हो रहा है।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण पूर्ववत् समझना चाहिए।

प्राणेश विज्ञप्तिरियं मदीया
तत्रैव नेया दिवसाः कियन्तः।
सम्प्रत्ययोग्यस्थितिरेष देशः
करा हिमांशोरपि तापयन्ति।। 17।।

अन्वय–प्राणेश! इयं मदीया विज्ञप्तिः, कियन्तः दिवसाः तत्रैव नेया। एषः देशः संप्रत्ययोग्यस्थितिः, (यतोहि अत्र) हिमांशोः करा अपि तापयन्ति।

Translation–A Heroin send letter to her Hero with deceptionaly, as she was very sad due to not returning of her hero, and now she wants indirectaly that her Hero recently come to her, she writes that o Lord of may life! this is my humble preyer, How many day you want to spent there, you live there because this place is not suitable for us. Now a days, Even the Rays of the moon are scorching me.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–प्रियतम के वियोग में विरहिणी नायिका कामदेव के बाणों से संतप्त है, परन्तु उसका पति वापस नहीं आ रहा है, अतएव वह तानें मारती हुई अप्रत्यक्ष रूप (छल) से अपने पास तुरन्त आने का निवेदन करती हुई कहती है कि हे मेरे प्राणों के स्वामी! यह मेरी प्रार्थना है कि आप अभी कुछ दिनों तक वहीं रहें, क्योंकि यह देश अब रहने लायक नहीं है क्योंकि यहाँ चन्द्रमा की किरणें भी गर्मी बरसा रहीं है। भावार्थ यह है कि मेरे शरीर में कामदेव ने कामाग्नि प्रदीप्त कर दी है, आप यदि कुछ दिन और नहीं आये, तो संभव है कि कामाग्नि प्रशमन में आप के कुल की मर्यादा भी न बचे। अतएव तुरन्त लौट आइये, और मेरे प्राणों की रक्षा करने के साथ-साथ अपनी मानमर्यादा की रक्षा भी कीजिए।

प्रस्तुत श्लोक में वंशस्थ छन्द है जिसका लक्षण ग्रन्थ के तृतीय श्लोक की तरह है, जो पूर्व में दिया जा चुका है।

कल्याणि चन्दनरसैः परिषिच्य गात्रं
द्वित्राण्यहानि कथमप्यतिवाहयेथाः।
अङ्के निधाय भवतीं परिरभ्य दोर्भ्यां
नेष्यामि सूर्यकिरणान्यपि शीतलत्त्वम्।। 18।।

अन्वय–(हे) कल्याणि! चन्दनरसैः गात्रं परिषिच्य, कथमपि द्वित्राणि अहानि अतिवाहयेथाः। (तदनन्तरे अहं) भवतीम्अङ्के निधाय, परिरभ्य दोर्भ्यां सूर्यकिरणान् अपि शीतलत्वं नेष्यामि।

Translation–Here received the letter of his Heroin and then He replied his Heroin to keep patience. He writes in the letter- O My beautiful wife! having besprinkled your body with sandal juice, you should stay there for two or three days, somehow I will reach there and shall place you on my lap and clasp you with my arms, then I shall cool even the fire of the sun by love.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–वियोगिनी नायिका का पत्र मिलते ही (परदेशी) नायक पत्र का जबाव देते हुए लिखता है कि हे कल्याणी! चन्दन के रस से अपने शरीर के अङ्गों को सींच करके किसी तरह दो-तीन दिन काट लो अर्थात् बिताओ। उसके बाद मैं पहुँचकर तुम्हें अपनी गोद में बैठा करके तथा दोनों बाहुओं से तुम्हारा गाढालिंगन करके, तपते हुए सूर्य की किरणों (के समान उत्पन्न तुम्हारे देह की गर्मी) को भी शीतल बना दूँगा।

प्रस्तुत श्लोक में बसन्ततिलका छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

अन्तर्गता मदनवह्निशिखावली या
सा बाध्यते किमिह चन्दनपङ्कलेपैः।
यत्कुम्भकारपचनोपरि पङ्कलेप-
स्तापाय केवलमसौ न तापशान्त्यैः।। 19।।

अनुवाद- (प्राणेश!) या मदनवह्निशिखावली अन्तर्गता, चन्दनपङ्कलेपैः किम् इह सा बाध्यते! यत्कुम्भकारपचनोपरि पङ्कलेपः तापशान्त्यै, न, असौ केवलं तापाय।

Translation–Heroin received the letter of her Hero, then she writes, O My Lifepartner! How could the passion's fire within be checked by smearing the sandal paste over the body, for the layer of clay over the patter's oven is only for conserking the heat and not for allying it. (So please come to me as soon as possible)

मालिनी हिन्दी व्याख्या–नायिका पत्रोत्तर में लिखती है कि (हे प्रियतम), जो कामाग्नि शरीर के अन्दर अन्दर मुझे जला रही है, क्या वह चन्दन के (ऊपरी शरीर में किये गये) अनुलेप से शान्त हो सकती है क्योंकि कुम्हार के आँवे के ऊपर लगा लेप क्या भीतर की अग्नि को शान्त कर सकता है, शायद नहीं, वह तो कवेल ताप को बढ़ाता ही है (तभी तो आँवे के भीतर रखे गये कच्चे घड़े या अन्य वर्तन (ईंटा, खपरा) आदि पूर्ण रूप से पक जाते हैं।

प्रस्तुत श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है, जिसका लक्षण पूर्व मे दिया जा चुका है।

दृष्ट्वा यासां नयनसुषमामङ्गवाराङ्गनानां
देशत्यागः परमकृतिभिः कृष्णसारैरकारि।
तासामेव स्तनयुगजिता हस्तिनः सन्ति मत्ताः
प्रायो मूर्खा परिभवविधौ नाभिमानं त्यजन्ति।। 20।।

अन्वय–(मित्रं प्रति कथयति मित्रम्) यासां नयनसुषमामङ्गवाराङ्गनानां दृष्ट्वा परमकृतिभिः कृष्णसारेरेकारि देशत्यागः (कृताः), तासामेव मत्ताः स्तनयुगजिताः हस्तिनः सन्ति। प्रायो मूर्खा परिभवविधौ अभिमानं न त्यजन्ति।

Translation–Hero says to his friend - on seeing the beauty of the eyes of courtezans, the blackspatted lovely antelopes abandoned their haunts. The elephants ashamed by the pair of their elevated breasts became mad. As a rule, fools though faced with defeat do not renounce their pride.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–नायक अपने मित्र को परस्त्रीगामी बनने से रोकने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से समझाते हुए कहता है कि हे मित्र! जिन वेश्याओं के नयनों की सुन्दरता को देखकर महामूर्ख हिरणों ने गुण-अवगुण का विचार किये बिना ही देश का परित्याग कर दिया, परन्तु जो मतवाले हाथी हैं, वे तो उनके (वेश्याओं के) ही कठोर कुचों से पराजित होकर भी मतवाले बने रहते हैं अर्थात् प्रसन्नता से फूले नहीं समाते। अतः स्पष्ट है कि प्रायः मूर्ख लोग दूसरे से अपमानित होने पर भी अपने मिथ्या अभिमान को नहीं छोड़ पाते। तात्पर्यार्थ यह है कि अपनी पत्नी को दूसरी स्त्रियों की टेढ़ी चितवन से पराभूत होकर कभी नहीं छोड़ना चाहिए और न ही परस्त्रीगामी बनना चाहिए।

प्रस्तुत श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है। कवि ने अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार के माध्यम से कर्त्तव्यबोध करने कराने का उपक्रम किया है। अप्रस्तुत प्रशंस्त अलंकार को अन्योक्ति अलंकार भी कहते हैं इसका लक्षण है–

1. क्वचिद् विशेषः सामान्यात्सामान्यं वा विशेषतः।
   कार्यान्निमित्तं कार्यं च हेतोरथ समात् समम्।।
   अप्रस्तुतात्प्रस्तुतं चेद् गम्यते पञ्चधा ततः।
   अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात्।। – साहित्यदर्पण
2. अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया। –काव्यप्रकाश
3. अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात् सा यत्र प्रस्तुताश्रया।
   एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्य शक्रान्त याचते।। –चन्द्रालोक

अर्थात् अप्रस्तुतप्रशंसा वहाँ होती है जहाँ–

1. अप्रस्तुत सामान्य से प्रस्तुत विशेष का,
2. अप्रस्तुत विशेष से प्रस्तुत सामान्य का,
3. अप्रस्तुत कार्य से प्रस्तुत कारण का,
4. अप्रस्तुत कारण से प्रस्तुत कार्य का, एवं
5. अप्रस्तुत सारूप्य से प्रस्तुत सारूप्य का व्यञ्जनयावबोध होता है।

गाढालिङ्गनपीडितस्तनतटं स्विद्यत्कपोलस्थलं
सन्दष्टाधरमुक्तसीत्कृतमभिभ्रान्तभ्रूनृत्यत्करम्।
चाटुप्रायवचो विचित्रमणितं घातैरुतैश्चाङ्कितं
वेश्यानां धृतिधाम पुष्पधनुषः प्राप्नोति धन्यो रतम्।। 21।।

अन्वय–धन्यो (अस्ति यः) पुष्पधनुषः धृतिधाम वेश्यानां रतं प्राप्नोति, (यत्र) गाढालिङ्गनपीडितस्तनतटं स्विद्यत्कपोलस्थलं, सन्दष्टाधरमुक्तसीत्कृतमभिभ्रान्तभ्रूनृत्यत्करम्, चाटुप्रायवचो विचित्रमणितं घातैरुतैश्चाङ्कितं (वर्तते)।

Translation–The Poet describes about the intercourse with hariot, stating that Lucky is the man who obtains bliss

granted by God, whose bow is made of flowers, bliss which arises from the curves of breasts pressed during light embraces, bliss which arises from the nibbling of lips, bliss manifested by the utterance of hissing sounds and frowning eye-brows, bliss shown by the dancing of hands, and murmuring of sweet words of endearment, bliss manifested by striking and cries, bliss whose strength is in the untiring thaught of courtezans.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कवि वेश्या के साथ सहवास किये गये किसी कामी व्यक्ति द्वारा अभिहित रति के आनन्द स्वरूप की अनुभुति को वर्णित करते हुए कहता है कि वह कोई धन्य व्यक्ति ही होगा, जो पुष्प धनुषी कामदेव की धीरता के धाम को वेश्याओं के रत (सम्भोग) से उत्पन्न आनन्द को प्राप्त करता है। जहाँ गाढालिंगन करने से (कुचों) स्तनों के दोनों तट पीड़ित होते हैं, गालों पर सात्विक भाव का पसीना निकलने लगता है। दन्तक्षत द्वारा अधर के कटने से सीत्कार की ध्वनि निकलती रहती है, तथा भौंहों में टेढ़ापन आ जाता है, अर्थात् नायिका की टेढी चितवन का आनन्द मिलता है, चाटुवाणी का प्रयोग रतिसंवर्धन में भूमिका निभाता है एवं एक विचित्र रोमाञ्च की परिस्थिति बन जाती है तथा रतिमंदिर पर किया जाने वाला घात प्रतिघात हृदय पर अंकित हो जाता है।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दूलविक्रीडित छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुङ्कुमाद्रे
कान्तापयोधरयुगे रतिखेदखिन्नः।
वक्षो निधाय भुजपञ्जरमध्यवर्ती
धन्यः क्षपां क्षपयति क्षणलब्धनिद्रः।। 22।।

अन्वय—(यः) रतिखेदखिन्नः मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुङ्कुमाद्रेकान्तापयोधरयुगे वक्षो निधाय भुजपञ्जरमध्यवर्ती क्षणलब्धनिद्रः क्षपां क्षपयति (सः) धन्यः।

Translation–The poet says Lucky the man, who wearied by the exertion caused by lovesprorts rests within the confines of his beloved's arms having placed his chest on her breasts, which are as large as the swelling of a rutting

elephant and which are wet with suffron and who snatching moments of sleep passes there the night.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कवि रतानन्द की अनुभूति एवं उससे उत्पन्न थकान को दूर करने का उपाय सुझाते हुए लिख रहा है कि भाग्यवान वह व्यक्ति है जो सम्भोग कृत्य में किये गये परिश्रम के कारण थक कर, मत्त गजराज के कुम्भ की तरह समुन्नत कुंकभ लेप से लिपे हुए अपनी प्रिया के उन्नत कुचस्थलों पर अपनी छाती (सीना) रखकर, प्रिया बाहुयुगल के नीचे अपने हाथों को सटाकर, कसकर दबाकर (आलिङ्गन मुद्रा में रखकर, या भेंटने की मुद्रा में), थोड़ी देर (क्षणभर) या हल्की सी निद्रा लेकर रात्रि व्यतीत करता है, वह धन्य है। कवि यहाँ कामी व्यक्ति की यथास्थिति एवं उसके द्वारा रतिक्रिया में प्राप्त अनुभूति की चर्चा कर रहा है। ऐसी ही अनुभूति, एवं भाव भंगिमाओं का विवेचन पण्डितराज जगन्नाथ की अधोलिखित मान्यता में अभिव्यक्त होता है जब वह किसी नायिका को अभिलक्ष्य करके लिखते हैं कि—

विधाय सा मद्वदनानुकूलं कपोलमूलं हृदये शयाना।
तन्वी तदानीमतुलां बलारेः साम्राज्यलक्ष्मीमधरीचचकार।।

उक्त श्लोक में बसन्ततिलका छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

हे रोहिणि त्वमसि रात्रिकरस्य भार्या
एनं निवारय पतिं सखि दुर्विनीतम्।
जालान्तरेण मम वासगृहं प्रविश्य
श्रोणीतिटं स्पृशति किं कुलधर्म एषः।। 23।।

अन्वय—हे रोहिणी! त्वं रात्रिकरस्य भार्या असि। (हे) सखि! एनं दुर्विनीतं पतिं निवारय। (यः) जालान्तरेण मम वासगृहं प्रविश्य (मम) श्रोणीतटं स्पृश्यति। किम् एषः कुलधर्मः (अस्ति)?

Translation–Doing complaint to Rohini (Night). Heroin says - O Rohini! you are the moon's wife. O dear one, restrain that bad husband of yours. Having crept in to my bed-room by the window. He touches the curves of my buttacks. Is this the trait of his family?

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कोई ललना नायिका चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी से उसके पति (चन्द्रमा) की क्रियाओं को लक्ष्य कर उलाहना देती हुई कहती है कि हे रोहिणी! तुम तो रात्रि करने वाले (चन्द्रमा) की भार्या हो, और उसकी सम्पूर्ण गतिविधियों से परिचित हो, इसलिए अपने इस दुर्विनीत (असभ्य) पति को (अभिसरण कर्म करने से) रोको। जो खिड़की के रास्ते, मेरे घर में प्रवेश करके मेरे कमरप्रान्त (नितम्ब प्रान्त या रतिमन्दिर) को अपनी किरणों के माध्यम से स्पर्श करता है। क्या यही एक श्रेष्ठ पुरुष का कुलधर्म है?

प्रस्तुत श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है, जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

अविदितसुखदुःखं निर्गुणं वस्तु किञ्चि-
ज्जडमतिरिह कश्चिन्मोक्ष इत्याचचक्षे।
मम तु मतमनङ्गस्मेरतारुण्यघूर्ण-
न्मदकलमदिराक्षी नीविमोक्षो हि मोक्षः।। 24।।

अन्वय–किञ्चित् अविदितसुखदुःखं निर्गुणं वस्तु कश्चित् मोक्ष इति आचचक्षे, (ते) इह जड़मतिः, मम (मते) तु मतमनङ्गस्मेरतारुण्यघूर्णन्मदकलमदिराक्षीनीविमोक्षो हि मोक्षः (अस्ति)।

Translation–A dull-witted person has said that bliss is a state devoid of attributes in which neither pleasures nor pains are felt. But, in my view, bliss is the loosening by some one quivering with the charming youthful vigour, of the waist-band of a lovely girl who being drunk with passion is making inarticulate sound. Here the poet humouring the views of Astika system of philosophy.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–कुछ लोग सुख-दुःख से रहित किसी निर्गुण वस्तु को जो मोक्ष कहते हैं, वे इस संसार में महामूर्ख ही कहलाये जायेंगे। मेरे मत में तो कामदेव के द्वारा विकसित जवानी में मदमस्त होकर रतिक्रीड़ा के लिय नयनों को इधर उधर घुमाता हुआ रसिक (कामी) व्यक्ति, जब मदोन्मत्त सुन्दर दिखने वाली मदिरा सी नयनों वाली किसी ललना का नीवी बन्धन खोलता (नीवि मोक्ष करता) है, तो वही वास्तव में मोक्ष है, वही उस कामी के लिए आनन्द स्वरूप ब्रह्मानन्द

सरोवर में डुबकी लगाना है। यहाँ कवि कामी नायक की मानसिकता को या तो उजागर कर रहा है, या तो किसी सहृदय व्यक्ति द्वारा मोक्ष का उपहास करने के संदर्भ में आस्तिक दर्शनों द्वारा मान्य मोक्ष की विधा का खण्डन करने का उपक्रम कर रहा है।

प्रस्तुत श्लोक में मालिनी छन्द है, जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

एनं पयोधरयुगं पतितं निरीक्ष्य
खेदं वृथा वहसि किं हरिणायताक्षि।
स्तब्धो विवेकरहितो जनतापकारी
योऽत्युन्नतः प्रपततीति किमत्र चित्रम्।। 25।।

अन्वय—हरिणायताक्षि! एनं पयोधरयुगं पतितं निरीक्ष्य किं खेदं वृथा वहसि? विवेकरहितो जनतापकारी स्तब्धो यः अति उन्नतः प्रपततीति, किमत्र चित्रम्।

Translation–The poet describes the position of a young woman, who herself watching her breasts and says O, having beautiful eyes like that of a fawn! why do you feel unhappiness, seeing your breats, who has fallen. A person, who is heigher in allrespect, but if he is knowledgeless, punisher of General persons, and irrational or unfeeling (stupid) man can falls down in future. Even the sun, who is immoveable, undiscerning and appressor falls down on sets. What wonder is here? For he, who has risen high tumbles sconer or later.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कोई नायक नायिका को शृंगार करते देख लेने पर, नायिका की तत्क्षण अपने कुचद्वयों को निहारने की दृष्टि के विषय में कहता है कि हे हिरणों के समान बड़ी-बड़ी आँखों वाली! इन पयोधरों (दोनों स्तनों) को नीचे की ओर झुके हुए देखकर के व्यर्थ में क्यों दुःखी हो रही हो? अज्ञानी एवं लोगों को सतामे वाला, संवेदनहीन, जो अत्यधिक ऊँचे पद आसीन व्यक्ति होता है, वह भी कभी-कभी भूमि की तरफ देखता है या गिर जाता है, (यहाँ तक कि सूर्य भी उदय एवं अस्त होते हैं), तो यदि तुम्हारे कुचद्वय यदि नीचे लटक गये हैं, तो इसमें विचित्रता ही क्या है?

उक्त श्लोक के निहितार्थ अर्थात् जीवन मे उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं।।

भास स्वप्नवासवदत्तम् में लिखते हैं– कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रारि पक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः। महाकवि भास ने आगे भी लिखा है कि–

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले
रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्योधर्मो बनानां
काले काले छिद्यते रुह्यते च।।

स्वप्नवा सवदत्तम्–6/10

ऐसा ही विचार महाकवि कालिदास के मेघदूत में वर्णित मिलता है, जहाँ वह कहते हैं–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।

–उत्तरमेघ 52

अयि मन्मथ चूतमञ्जरि श्रवणव्यायतचारुलोचने।
अपहृत्य मनः क्व यासि तत् किमराजन्यकमत्र राजते।। 26।।

अन्वय–अयि मन्मथ चूतमञ्जरि! श्रवणव्यायतचारुलोचने, अपहृत्य मनः क्व यासि? तत् किमराजन्यकमत्र राजते।

Translation–Seeing a beautiful girl an enamoured boy saying- O girl! you are the cluster of mango - flowers on the tree, which is the God of Love. O girl! whose beautiful eyes - stretch out to your ears, having taken the heart away from me, where are you going? could that, which is not royel rule in my heart? Meaning is that you can not disappear from my eyeside.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–किसी रमणीय नायिका के रूप सौन्दर्य पर मोहित एक नवयुवक उसे सम्बोधित करते हुए कह रहा है कि हे कामदेव रूपी आम्रमञ्जरी एवं कानों तक विस्तृत बड़े-बड़े तथा सुन्दर आँखों वाली, मेरे मन को हरण करके तुम कहाँ जा रही हो? क्या तुमने इस पृथ्वी को क्षत्रियों या योद्धाओं के समूह से रहित समझ लिया है? अर्थात् यह पृथ्वी वीरों (श्रृंगार प्रेमियों) से खाली नहीं है। तुमने मेरा

चित्त चुराया है, तो चोरी का दण्ड तुम्हें अवश्य मिलेगा, और अब तुम मेरी निगाहों से नहीं बच सकती।

प्रस्तुत श्लोक में उद्गाथा या गीति छन्द है जिसका लक्षण है–

आर्या प्रथमदलोक्तं यदि कथमपि लक्षणं भवेदुभयोः।
बलयोः कृतयति शोभां तां गीतिं गीतवान् भुजङ्गेशः।।

–वृत्त रत्नाकर–2/8

गीति छन्द आर्या का ही एक भेद विशेष है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में बारह तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में अट्ठारह मात्राएँ होती हैं।

यदि कथमपि दैवाद् दुर्गमार्गे स्खलित्त्वा
विदलति तनुमध्या दीयतां नौ न दोषः।
पृथुनिविडकुचाभ्यां वर्त्म पश्यावरुद्धं
कथयितुमिव नेत्रे कर्णमूले प्रयातः।। 27।।

अन्वय–नेत्रे कर्णमूले प्रयातः कथयितुमिव, पृथुनिविडकुचाभ्यां वर्त्म पश्यावरुद्धं (जातम्)। यदि कथमपि दैवाद्दुर्गमार्गे स्खलित्त्वा तनुमध्या विदलति, दोषः नौ दीयतां न।

Translation–The Extensive eyes of the Heroin the poet says to her - see that the passage is blacked by her firm and large breasts. Having slipped, by chance, somehow or other, on a difficult path, should slender the waisted girl hurt herself, Let not that blame lie on us (eyes.)

मालिनी हिन्दी व्याख्या–श्रवणव्यायत चारु लोचने का उत्तर देते हुए कवि कह रहा है कि नायिका के दोनों नेत्र मानों नायिका के कान में कुछ कहने के लिए ही कान के पास तक गये हैं (अर्थात् वे नेत्र नायिका को कुछ समझाने के लिए इतने बड़े-बड़े हैं)। वे नायिका से कह रहे है कि तुम्हारे बड़े-बड़े एवं घने दोनो कुचों के द्वारा हमारे द्वारा देखने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया गया है। यदि दुर्भाग्य से, किसी दुर्गम मार्ग में चलने से पतली कमर वाली तुम गिर जाती हो अर्थात् चोट खा जाती है, तो हम दोनों (नेत्रों) को दोष मत देना।

प्रस्तुत श्लोक में अतिशयोक्ति अलंकार एवं मालिनी छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

कोपस्त्वया हृदि कृतो यदि पङ्कजाक्षि?
शोचामि यत्तव किमत्र विरोधमन्यत्।
आश्लेषमर्पय मदर्पितपूर्वमुच्चै-
रुच्चैः समर्पय मदर्पित चुम्बनं च।। 28।।

अन्वय–पङ्कजाक्षि! यदि त्वया कोपः हदि कृतो, (अहं) शोचामि, यत् तव विरोधं किम्? अन्यत्(किम्)। मदर्पितपूर्वमुच्चैः –आश्लेषमर्पय, मदर्पित चुम्बनं च उच्चैः समर्पय।

Translation–Hero says to his Heroin - O Lotus-eyed girl! that in your heart cherish it will against me, I grieve to observe that there is a series of obstacles to our union. In such a state the only course left is give back that embrace which I gave you before and return that warm kiss which too was given by me before.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–नायक रूठी हुई नायिका को मनाते हुए कहता है कि हे कमलनयनी! यदि तुमने (मुझसे नाराज होकर) क्रोध को अपने हृदय में रख लिया है, तो मैं सोच रहा हूँ कि आखिर तुम्हारा (मुझसे) विरोध किस बात को लेकर है? क्या कोई तुम्हारा दूसरा (प्रियतम) भी है? और यदि है तो फिर मैं तुम्हारे क्रोध को शान्त करने में कर ही क्या सकता हूँ। "और करै अपराध कोउ, और पाव फल भोग"। ठीक है, अब तुम मेरे द्वारा जो तुम्हारा गाढ़ालिंगन किया गया था, उसे मुझे लौटा दो, साथ ही जो मेरे द्वारा जो चुम्बन अर्पित किया गया था, उसे भी (दो गुने रूप में) उच्च रूप में मुझे समर्पित कर दो। ऐसा कहकर नायक नायिका के क्रोध को शान्त करना चाहता है, क्योंकि यदि वह पुनः आलिंगन एवं चुम्बन आदि क्रियाओं में लिप्त होगी, तो उसका ध्यान भटकेगा, एवं धीरे-धीरे उसका क्रोध शान्त हो जाएगा।

प्रस्तुत श्लोक में वसन्त तिलका छन्द है, जिसका लक्षण पूर्ववत् है।

मानं मानिनि मुञ्च देवि दयिते! मिथ्यावचः श्रूयते
कः कोपो निजसेवके यदि वचः सत्यं त्वया गृह्यते।
दोर्भ्यां बन्धनमाशु दन्तदलनं पीनस्तनास्फालनं
दोषश्चेन्मम ते कटाक्षविशिखैः शस्त्रैः प्रहारं कुरु।। 29।।

अन्वय–मानिनि! मानं मुञ्च, देवि! दयिते मिथ्यावचः श्रूयते, निजसेवके किं कोपो यदि त्वया सत्यं वचः गृह्यते। मम दोषः चेत्, ते आशु दोर्भ्यां बन्धनं दन्तदलनं पीनस्तस्तनास्फालनं कटाक्षविशिखैः शस्त्रैः प्रहारं कुरु।

Translation–Hero appeases his Heroin with different types of talks, saying that O! proudy my beautiful lady, give up your pride. O! darling, will my words fall on deaf ears? why this anger to me? I am your slove, if you trust my words. The swift entwining of arms, the biting with teeth, the stroking of large breasts - if all this is an offence, do you then strike me, with the arrows of your side long glances.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–नायक अपनी रूठी हुई नायिका को मनाने के उपक्रम स्वरूप हंसी में उससे कहता है कि मानिनी! अब अपना मान (हठ) छोड़ो, हे प्रिये! मेरे विषय में तुम ने (अपनी सखियों या अन्य व्यक्तियों से) झूठा (कलंक) सुना होगा। यदि तुम सही-सही तथ्य जान लोगी, तो अपने इस सेवक पर क्रोध नहीं करोगी। और यदि मेरा हो तो फिर (मैं तुम्हारे सामने हूँ मुझे अपने बाहुपाश में बाँध लो, अपने दांतो से मुझे काट लो, अपने बड़े-बड़े एवं नुकीले कुचों से मारो (पीट दो), और अपनी टेढ़ी चितवन रूपी बाणों के हथियार से मुझ पर प्रहार करो।

प्रस्तुत श्लोक में शार्दू विक्रीडित छन्द है, जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

किं मां निरीक्षसि घटेन कटिस्थितेन
वक्त्रेण चारुपरिमीलित लोचनेन।
अन्यं निरीक्ष्य पुरुषं तव भाग्ययोग्यं
नाहं घटाङ्कितकटिं प्रमदां भजामि।। 30।।

अन्वय–(हे मानिनि)! घटेन कटिस्थितेन, वक्त्रेण चारुपरिमीलितलोचनेन किं

मां निरीक्षसि? तव भाग्यभोग्यं अन्यं पुरुषं निरीक्ष्य, अहं घटाङ्कितकटिं प्रमदां न भजामि।

Translation–Poet says to a lovely women, who is stareing looking to the poet - O! Beautiful lady? why do you stare at me with your eyes half closed and a water-pot on your hips, Look on another man worthy of your choice. I do not like a girl whose hips bears the impress of a water pot. In this way the poet advice that girl to elect a perfect person, who can be come her husband.

मालिनी हिन्दी व्याख्या–उक्त श्लोक के सम्बन्ध में एक किंवदन्ती प्राप्त मिलती है कि एक दिन कालिदास सन्ध्याकाल में नदी के किनारे घूम रहे थे। "कालिदास जी" नदी के किनारे आये हैं, यह बात जब 'लखिमा'[1] नामक विदुषी को मालुम हुई, तो वह मिलने के लिए, जल भरने के बहाने कमर प्रान्त में घड़ा दबाये हुए नदी किनारे पहुँच गयी और कालिदास को टकटकी लगाकर एक नजर से देखने लगी, तभी कालिदास ने कहा कि–हे सुन्दरी! तुम अपने कमर में जलभरे हुए घट को लेकर सुन्दर मुखमण्डल में उत्सुकता भरी नजरों से मुझे क्यों देख रही हो? तुम्हारे भाग्य के द्वारा प्राप्त भोग्य किसी अन्य पुरुष को देखो। मैं घट से अन्वित कमर वाली (कमर पर घड़ा रख कर पानी भरने वाली) स्त्री को नहीं देखता हूँ (चाहता हूँ)।

प्रस्तुत श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है जिसका लक्षण पूर्व में दिया जा चुका है।

सत्यं ब्रवीषि मकरध्वजबाणपीड।
नाहं त्वदर्पितदृशा परिचिन्तयामि।
दासोऽद्य मे विघटितस्तव तुल्यरूपः
सोऽयं भवेन्नहि भवेदिति मे वितर्कः।। 31।।

"इति श्री कालिदासविरचितं श्रृङ्गारतिलकं समाप्तम्"

अन्वय–मकरध्वजबाणपीड! सत्यं ब्रवीषि। अहं त्वदर्पितदृशा न परिचिन्तयामि। अद्य मे तवतुल्यरूपः दासः विघटितः, सोऽयं भवेन्निहि भवेदिति मे विचारः।

1. महाकवि कालिदास का सम्बन्ध विद्योत्तमा नामक विदुषी से था, परन्तु लखिमा नामक विदुषी का सन्दर्भ किसी अन्य कालिदास (13 वीं 14 वीं) शताब्दी में हो सकता है। समीक्षक वृन्द कालिदास नामक कवि एवं 'लखिमा' के सन्दर्भ में मौन दिखते हैं।

Translation–O! wounded by the arrows of cupid! you say truly about my sufferings, but I am not embarrassed by your glances. Today my slove was strolled anywhere, who has just like your face. That is you are not? thats why I am stareing looking towards you.

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कवि द्वारा पूर्वोक्त कथन कि "तुम अपने लिए कोई दूसरा पुरुष खोजो" का प्रत्युत्तर देती हुई वह सुन्दरवदना (विदुषी) कहती है कि हे कामदेव के बाणों से घायल (आहत) तुम सत्य ही बोल रहे हो (कि तुम मुझे नहीं चाहते, जैसा कि तुम्हारे व्यवहार से झलक भी रहा है), परन्तु मैं भी तुममें समर्पित नहीं हूँ, ऐसा मैं सोचती हूँ या तर्कणा करती हूँ। (अरे!) आज ही तुम्हारी आकृति के समान शरीराकृति वाला मेरा सेवक (दास) कहीं भटक गया है या रास्ता भूल गया है। अतः उसी को खोजते हुए मैं यहाँ आयी हूँ कि वह (मेरा) दास (कालिदास) आप ही तो नहीं हो, वह (आप) हो भी सकते हैं, या नहीं भी हो सकते इसकी प्रतीति के लिए मैं आपको एकटक निगाहों से देख रहीं हूँ।

उक्त श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है जिसका पूर्व में लक्षण दिया जा चुका है।

।। कालिदास विरचित श्रृङ्गारतिलक समाप्त हुआ।।

श्लोकानुक्रमणिका·

क्र.सं.	श्लोक	श्लोक सं०	पृ० सं०
1.	अन्तर्गता मदनवह्नि शिखावली या	19	19
2.	अयि मन्मथ चूतमञ्जरी श्रवण	26	26
3.	अविदितसुखदुःखं निर्गुणं वस्तु	24	24
4.	आयातामधुयामिनी यदि पुनः	02	03
5.	इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन	03	04
6.	एको हि खञ्जनवरो नलिनी	04	05
7.	एनं पयोधरयुगं पतितं निरीक्ष्य	25	25
8.	क्वभ्रातश्चलितोऽपि वैद्यकगृहे	14	15
9.	कल्याणि चन्दनरसै परिषिज्य गात्रं	18	18
10.	कस्तूरीवरपत्रभङ्गनिकरो	07	08
11.	किं किं वक्त्रमुपेत्य चुम्बसि	11	12
12.	किं मां निरीक्षसि घटेन	30	29
13.	कोपस्त्वया हृदि कृतो यदि	28	28
14.	गाढ़ालिङ्गनपीडितस्तनतटं	21	21
15.	चन्द्रश्चण्डकरायते मृदुगतिः	16	17
16.	झटिति प्रविश गेहे मा बहिः	06	07
17.	दृष्ट्वा यासां नयनसुषमां	20	20
18.	नाहं नो मम वल्लभश्च कुपितः	08	09
19.	प्राणेश विज्ञप्तिरियं मदीया	17	18
20.	बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं	01	01

क्र.सं.	श्लोक	श्लोक सं०	पृ० सं०
21.	मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुङ्कुमाद्रे	22	22
22.	मानं मानिनि मुञ्च देवि दयिते	29	29
23.	यत्वन्नेत्रसमानकान्तिसलिले	15	16
24.	यदि कथमपि दैवाद् दुर्गमार्गे	27	27
25.	यामिन्येषा बहुलजलदैर्बद्धं	13	14
26.	ये ये खञ्जनमेकमेव कमले	05	06
27.	वाणिज्येन गतः स मे गृहपतिः	12	13
28.	श्लाघ्यं नीरसकाष्ठताडन शतं	10	11
29.	सत्यं ब्रवीषि मकरध्वजबाणपीड	31	30
30.	समायाते कान्ते कथमपि च कालेन	09	10
31.	हे रोहिणि त्वमसि रात्रिकरस्य भार्या	23	23

डॉ० रामबहादुर (शुक्ल)

जन्मस्थान : ग्राम ब्यूर, चित्रकूट, उ० प्र०

जन्मतिथि : 01-02-1967

पिता : श्रीशिवनाथ प्रसाद शुक्ल

माता : (स्व०) श्रीमति विद्यावती शुक्ला

शिक्षा : एम ए० (संस्कृत, दर्शनशास्त्र), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, यू.जी. सी. (नेट) डी. फिल्, ज्योतिषाचार्य (फलित)

कार्य क्षेत्र : उपाचार्य- संस्कृत विभाग जम्मू-विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू तवी-180006

सम्मान : 1. अभिनवअभिनवगुप्त अलङ्करण 2006
2. ज्योतिष शिरोमणि - 2005

शोध अनुभव :22 वर्ष से अधिक

अध्यापन अनुभव :
18 वर्ष से अधिक
सचिव - अखिल भारतीय दर्शन परिषद

शोधनिर्देशन : एम. फिल् - 33
पी.एच-डी - 17

सेमिनार सहभागिता -अन्तर्राष्ट्रीय - 27
राष्ट्रिय 77

संस्कृत कविसम्मेलन - 21

प्रकाशित ग्रन्थ :

1. नैषधीयचरितम् की शास्त्रीय मीमांसा
2. शृङ्गारतिलकम् - हिन्दी एवं अंग्रेजी व्याख्या
3. श्रीरामगीता - हिन्दी एवं अंग्रेजी व्याख्या
4. शान्तिशतकम् - हिन्दी व्याख्या
5. शैवरामायणम् - हिन्दी व्याख्या
6. History of All India oriental conference

ई०मेल : rambshukla@yahoo.co.in

BOOK
EASTERN EBL LINKERS

EASTERN BOOK LINKERS

(INDOLOGICAL PUBLISHERS & BOOKSELLERS)
HO.: 5825, New Chandrawal, Jawahar Nagar,
Delhi-110007 Ph.: 23850287, 09811232913
Showroom: 4806/24, Bharat Ram Road,
Ansari Road, Darya Ganj, Delhi-110002
Phone: 23285413
e-mail: eblindology@gmail.com
eblinfo76@gmail.com
website: www.eblindology.com

ISBN: 978-81-7854-291-1
9 788178 542911